अभ्युदय

सांकृतिक गौरव अंक

पृष्ठ संख्या : 64 स्मारिका–2025 मूल्य : रू. 100/-

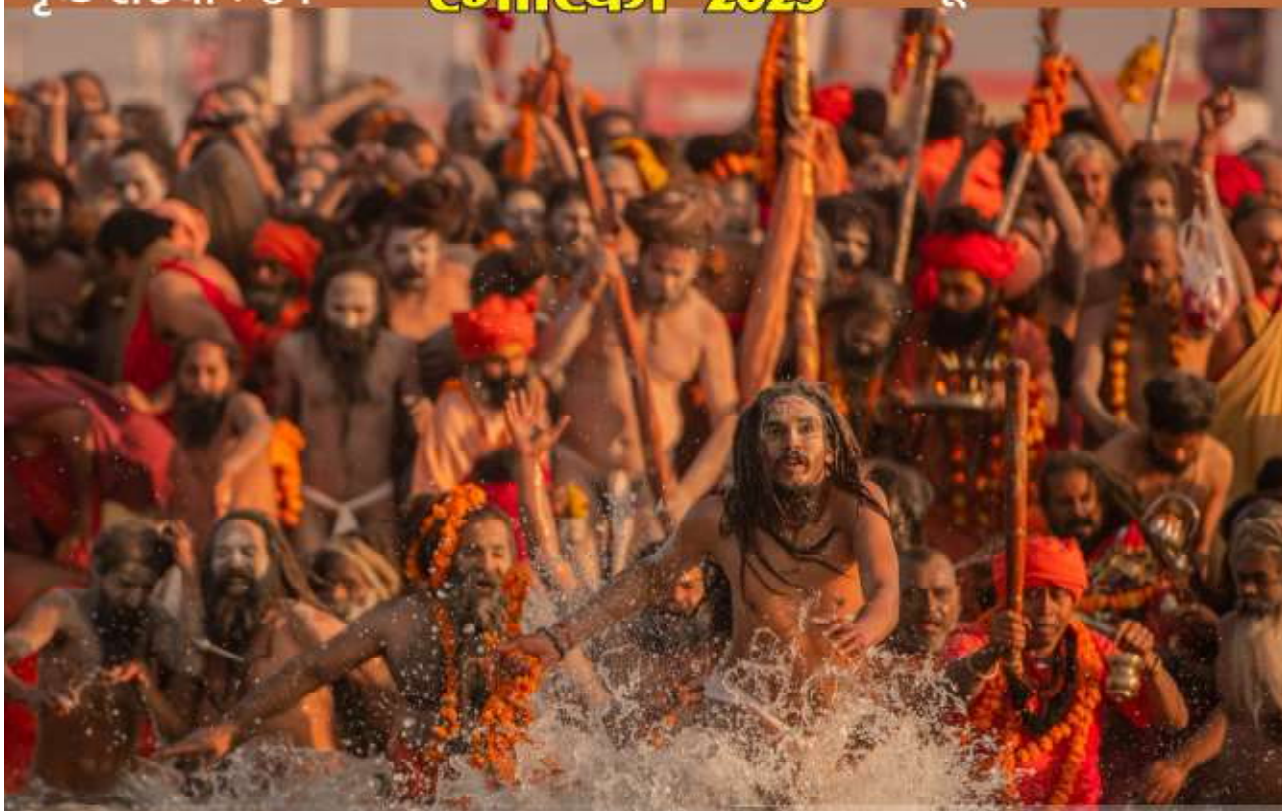

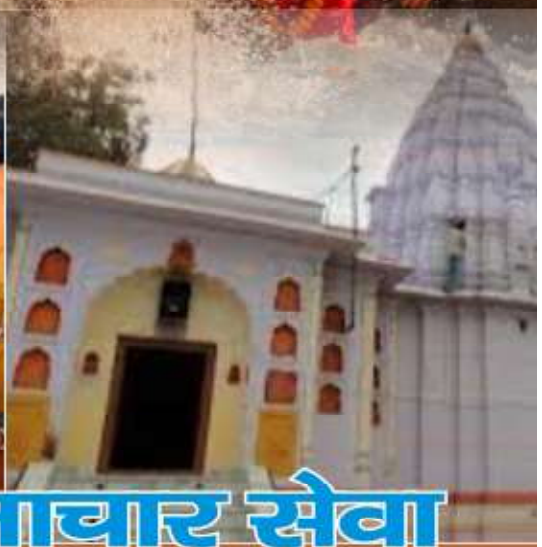

उत्तर प्रदेश समाचार सेवा

के बाइस वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में प्रकाशित 2003–2025

उ॰ प्र॰ समाचार सेवा के सांस्कृतिक गौरव
विशेषांक के प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएँ
AFFILIATION NO. 2133448 C.B.S.E / U.P. BOARD
Urmila
Educational Academy
NEET /IIT
FOUNDATION
CLASSESS
ADMISSIONS
OPEN 2025-2026
NURSERY TO 10+2
SCIENCE,COMMERCE,HUMANITIES STREAM
विनय शुक्ल
प्रबन्धक
DEVELOPING THE CREATIVE
INNOVATORS OF TOMORROW
SETTING BENCHMARKS IN THE FIELD OF EDUCATION FOR PAST 24 YEARS
84003 22001, 99198 46319, 99848 32000, 93070 22122
Roadways,Basti - U.P. ueaedubst@gmail.com WWW.ueacademy.in

अभिनन्दन
आई.पी.एस.

पुलिस अधीक्षक
बस्ती

सन्देश

उत्तर प्रदेश समाचार सेवा कई वर्ष से अपनी सेवाएँ दे रही है। श्रीराम जन्मभूमि एवं सांस्कृतिक गौरव विशेषांक उत्कृष्ट रचना है। इससे आम जनमानस में मन्दिर के निर्माण के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में प्रकाशन से समाज में सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

समाचार सेवा के उज्ज्वल भविष्य के लिए मैं प्रभु से कामना करता हूँ।

अभिनन्दन
पुलिस अधीक्षक
बस्ती

उ० प्र० समाचार सेवा के 22वें स्थापना दिवस पर सांस्कृतिक गौरव
विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ

स्व. वेद प्रकाश रावत

50 वर्ष से निरंतर आपकी सेवा में

कुमार कफेक्सनरी

(शुद्धता और स्वच्छता हमारी परंपरा)

श्री राम जन्म भूमि आन्दोलन के अग्रणी नेता
डॉ. प्रवीण भाई तोगड़िया का हार्दिक स्वागत

Contact :
9956165322
9198656123
9936888808

तारीन, बहादुरगंज, पचराहा, शाहजहाँपुर

डॉ0 आनन्द प्रकाश मिश्र

एम.बी.बी.एस.

सुखदेव हास्पिटल

कांट, शाहजहाँपुर उ.प्र.
मो. 9956957490

देश के विभिन्न शहरों में किए गए नाटकों का मंचन –

प्रोपराइटर - अजय प्रोडक्शन हाउस, मुम्बई
प्रबंधक - सजग समाज सेवा समिति
कोआर्डीनेटर - सजग नाट्य संस्थान
सदस्य - फिल्म राइटर एसोसिएशन, मुम्बई
सदस्य - दादा साहिब फिल्म एकेडमी, मुम्बई

1. मजा न बन जाये सजा (गुटखा व तम्बाकू विरोधी)
2. परलोक एक दर्शन
3. एक ही भूल
4. फैसला
5. विदा
6. चौथी या विदा
7. UNCHAINYA
8. गंगा मैया भला करें
9. कूंची
10. जहर बूटी धू धू धू
11. सोच अपना-अपना
12. पतन
13. सेकण्ड
14. साल
15. हर की मार
16. करे कोई भरे कोई
17. खाना तैयार है।

अभ्युदय

उ.प्र.समाचार सेवा का प्रकाशन

सांस्कृतिक गौरव अंक

2025

संपादक
सर्वेश कुमार सिंह

विधि सलाहकार
आलोक कुमार बाजपेयी

संपादकीय कार्यालय
117–प्रथम तल, प्रिंस काम्पलेक्स
हजरतगंज, लखनऊ–226001

पृष्ठ 64, मूल्य 100 रुपये

उत्तर प्रदेश समाचार सेवा के लिए स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक सर्वेश कुमार सिंह द्वारा माडर्न प्रिंटर्स, 10 घसियारी मण्डी, कैसरबाग, लखनऊ–226001 से मुद्रित एवं 117–प्रथम तल, प्रिंस काम्पलेक्स, हजरतगंज, लखनऊ–226001 से प्रकाशित।
फोनः 9453272129 WhatsAPP: 9140624166
E-mail: upsamacharsewa@gmail.com

अपनी बात 02
सम्पादकीय 03
संघ के संकल्प से सिद्ध हुआ राम 05
22 जनवरी केवल एक तारीख नहीं,यह 11
सनातन में नवचेतना का युग 18
त्रिवेणी संगम का महत्व 21
अध्यात्म,राष्ट्रीय एकता और 24
आदि तीर्थ संभल 27
तथ्यों की पत्रकारिता के दो दशक 31
शुरु हो चुका है भारत के भाग्योदय का 35
उत्तर प्रदेश समाचार सेवा ने किया 40
भगवान राम के जन्म का कारक 42
ललितपुर के ऐतिहासिक 45
राम के जीवन चरित्र की महिमा 49
प्रयाग में विराजते हैं सभी तीर्थ 53
आजमगढ़ का पौराणिक महत्व 56

अपनी बात

उत्तर प्रदेश समाचार सेवा ने दो दशक की सफल यात्रा के बाद 2023 में 'अक्षरा' का प्रकाशन किया। इसमें 20 वर्ष की यात्रा का लेखा जोखा था। साथ ही देश विदेश की प्रमुख घटनाएं जो इन बीस वर्षों में घटित हुई या जो महत्वपूर्ण फैसले हुए इन्हें समाहित किया गया। अब अक्षरा के बाद 'अभ्युदय' का प्रकाशन किया गया है। गत 2024 में कोई स्मारिका प्रकाशित नहीं हुई।

अभ्युदय बहुत महत्वपूर्ण और समीचीन विषय को समाहित कर रही है। यह विषय है सनातन संस्कृति का ज्वार जो भारत ही नहीं विश्व में हिलोरें मार रहा है। इसीलिए इसे 'सांस्कृतिक गौरव अंक' कहा गया है। भारत ने एक हजार साल तक अनेक आक्रमण सहे। विदेशी आक्रांता केवल सेना ही लेकर नहीं आए, बल्कि वैचारिक अस्त्र–शस्त्र से सज्जित थे। इसी काल खंड में दो विदेशी विचार और धर्मों ने प्रवेश कर दिया। लेकिन हमारे पूर्वज सामर्थ्य अनुसार लड़े,प्रतिकार किया। कुछ को समाहित कर लिया। अपने में विलीन भी किया लेकिन, कुछ ने सनातन को गहरे घाव दिये।

इन गहरे घावों से उबरने का समय 2000 के बाद शुरू हुआ। यानि 21वीं सदी में सनातन भारत ने फिर अंगड़ाई ली। भारत उठ खड़ा हुआ। वर्ष 2024 की 22 जनवरी को अयोध्या में 500 साल के कलंक से मुक्ति पाई। श्रीराम जन्मभूमि में विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा हुई। सनातन चेतना के नवजागरण का यही क्रम आगे बढ़ा। काशी,मथुरा और इसके बाद सम्भल के विषय पर सकारात्मक प्रयास आरम्भ हो गए। यानि सनातन संस्कृति के गौरव का अभ्युदय काल शुरू हो गया। प्रयागराज के महाकुंभ ने इसे विश्व में दैदीप्यमान कर दिया। यही है अभ्युदय प्रकाशन का विषय और सांस्कृतिक गौरव की गाथा का आधार। इसमें विद्वान लेखकों,पत्रकारों,उत्तर प्रदेश समाचार सेवा के संवाददाताओं का अथक योगदान है। हमारे सुधि विज्ञापनदाताओं ने पूर्व की भांति अपना आशीर्वाद दिया है। जिसके कारण हम इस अमूल्य विशेषांक को प्रकाशित कर सके हैं। सहयोग के आप सभी का आभार।

सादर,

(सर्वेश कुमार सिंह)
सम्पादक

संपादकीय

सांस्कृतिक अभ्युदय

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हमारे राष्ट्रीय नेतृत्व ने जिस स्वतंत्र भारत का सपना देखा था, वह अब साकार हो रहा है। यह सपना स्वतंत्र राजनीतिक,प्रशासनिक भारत के साथ–साथ सांस्कृतिक अभ्युदय का था। स्वतंत्रता के बाद सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण के साथ इस सांस्कृतिक अभ्युदय की शुरुआत हो गई थी। लेकिन जब अयोध्या में 500 साल बाद 22 जनवरी 2024 को श्रीराम मंदिर में उनके विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा हुई तो भारतवासियों और विश्व में निवास कर रहे भारतवंशियों को सांस्कृतिक उत्थान और स्वतंत्रता का आह्लादित कर देने वाला अहसास हुआ। यह दिन भारत की सनातन हिन्दू चेतना के जागरण से उपस्थित हुआ।

भारत सनातन संस्कृति,आध्यात्म और ज्ञान विज्ञान का केंद्र रहा है। लेकिन विदेशी आक्रमणों और आक्रांताओं के शासन ने भारतीय जन मानस को कुचलने के साथ साथ आस्था के केंद्रों पर आघात किया। देशभर में ढूंढ ढूंढ कर ऐसे आस्था केंद्रों को तलाशा गया जिनमें भारतीयों की अगाध आस्था थी। या जो भारत की सांस्कृतिक पहचान थे। इनमें हिन्दू,बौद्ध और जैन धर्म स्थल शामिल थे। भारत का स्वाभिमानी समाज इनकी रक्षा के लिए अपनी सामर्थ्य अनुसार संघर्ष करता रहा। एक हजार साल तक भारत राजनैतिक,सांस्कृतिक स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करता रहा। इस एक हजार साल के काल खंड में कोई समय ऐसा नहीं है,जब देश के किसी न किसी हिस्से में प्रतिरोध न रहा हों।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जिस सांस्कृतिक अभ्युदय की कल्पना थी, वह स्वतः प्रकट नहीं हुआ। इसके लिए भी भारतीय जन मानस को एक नियोजित अभियान चलाना पड़ा। हमारी सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना के मुख्य केंद्रों अयोध्या,काशी और मथुरा की पीड़ा ने एक सांस्कृतिक चेतना जागरण के साथ साथ जन आंदोलन को भी जन्म दिया। चालीस वर्ष के आंदोलन ने अयोध्या विजयोत्सव का उल्लास प्रकट किया। इसके साथ ही स्वप्रेरणा से संगठित और जाग्रत हुए समाज ने काशी और मथुरा के लिए प्रयास शुरू कर दिया। समाज जागरण ने मुख्य केंद्रों के साथ ही उन स्थलों की मुक्ति के लिए भी प्रयास शुरू कर दिए हैं जो कभी अध्यात्म के बढ़ें केंद्र होते थे। ऐसा ही केंद्र सम्भल भी है। जहां कभी 64 तीर्थ और 19 कूप स्थापित थे। केंद्र में हरि मंदिर था। सांस्कृतिक अभ्युदय के इस युग में समाज ने यहां भी खोया हुआ गौरव पाने के विधिक प्रयास आरम्भ कर दिए हैं। सरकार और प्रशासन के सदप्रयास से गुमनाम 64 तीर्थ और 19 कूप तलाशे जा रहे हैं।

सांस्कृतिक अभ्युदय के प्रकटीकरण के इसी युग में प्रयागराज में महाकुंभ का अमृत फल देने वाला योग बना है। इसलिए मनीषियों और भविष्यदृष्टाओं की ये भविष्यवाणी भी सार्थक होती दिख रही है कि 21वीं शताब्दी विश्व में भारत की शताब्दी होगी।

शांति मंत्र – अथर्ववेद

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवः। भद्रं पश्येमक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गाइस्तुष्टुवाघंसस्तनुभिः। व्ययेम देवहितं यदायुः।
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्वेदाः।
स्वस्ति नास्ताक्षरयो अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिरधातु ।।
।। ओम शांतिः शांतिः शांतिः।।

मंत्र दृष्टा ऋषि की प्रार्थना का भावार्थ

हे देवों, हम अपने कानों से सुनें कि क्या शुभ है, हे देवों, क्या हम अपनी आँखों से देखें कि क्या शुभ है, हे यजात्र, क्या हम मजबूत शरीर और अंगों के साथ संतोष के साथ जी सकते हैं। हम देवताओं द्वारा हमें आवंटित जीवनकाल के दौरान भगवान की स्तुति करें और उनकी महिमा का गान करें, महान यशस्वी भगवान इंद्र हमारी खुशहाली और समृद्धि में वृद्धि करें, भगवान पूषा, जो सर्वज्ञ हैं, हमें खुशहाली और समृद्धि का आशीर्वाद दें, भगवान ताक्षर्य (गरुड़), जो रक्षक हैं, हमें खुशहाली और समृद्धि का आशीर्वाद दें, भगवान बृहस्पति भी हमें खुशहाली और समृद्धि का आशीर्वाद दें।

संघ के संकल्प से सिद्ध हुआ राम मंदिर आंदोलन

सर्वेश कुमार सिंह

अयोध्या में भगवान श्रीराम के भव्य दिव्य नवनिर्मित गर्भगृह में विराजमान होने का एक वर्ष पूर्ण हो गया। वर्ष 2024 की जनवरी में 22 तारीख को लंबे आंदोलन और न्यायालय की प्रक्रिया के बाद श्रीराम के जन्मस्थान पर उनके विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा हुई। वह घड़ी परम आनंदोत्सव की थी,जब भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक डा. मोहन भागवत और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यजमान अनिल मिश्र के साथ प्राण प्रतिष्ठा का अनुष्ठान संपन्न कराया। तब संपूर्ण विश्व के सनातन धर्मावलंबी समाज ने एक अकल्पनीय विजयोत्सव की अनुभूति की। यह विजयोत्सव जिसे हिन्दू समाज 492 साल के संघर्ष के प्रतिफल के रूप में अपने स्वप्न को साकार होते देख रहा था, तो गर्व और उल्लास से भरा था।

लेकिन ये उपलब्धि क्या इतनी ही आसानी से प्राप्त हो गई, जितनी आज की पीढ़ी प्रचार माध्यमों से जान रही है। ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। इस उपलब्धि को हासिल करने के लिए विधिवत योजना बनी, और यह योजना बनाई राष्ट्रीय स्वयंसेवक

संघ (आरएसएस) ने। इसके लिए संघ के तत्कालीन सरसंघचालक बाला साहब देवरस ने सभी परिस्थितियों, संघ की सामर्थ्य,समाज की आकांक्षा और मनोदशा का गहन अध्ययन, विश्लेषण कर उन कार्यकर्ताओं को श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन को आगे बढ़ाने और लक्ष्य तक पहुंचने की अनुमति दी जो इस आंदोलन को स्थानीय स्तर पर पश्चिम उत्तर प्रदेश में खासकर मुरादाबाद,मेरठ और कुमायूं मंडलों में चला रहे थे।

संघ के सरसंघचालक से आंदोलन की सफलता और संघ का मार्गदर्शन मांगने वालों में मुरादाबाद के दो सूत्रधार थे, एक मुरादाबाद के पूर्व विभाग प्रचारक और तत्कालीन हिन्दू जागरण मंच के पश्चिम उत्तर प्रदेश के संयोजक दिनेश चंद्र त्यागी (शिक्षा एम. एससी फिजिक्स), दूसरे कांग्रेस के प्रखर नेता पूर्व मंत्री,तीन बार कांग्रेस से विधायक रहे मुरादाबाद निवासी दाऊदयाल खन्ना। बाला साहब से आंदोलन की योजना और विस्तार के लिए यह चर्चा बदायूं में लगे संघ के शीत शिविर में हुई। यहां बाला साहब देवरस दो दिन के प्रवास पर शिविर में आए थे। इस वार्ता में संघ के सरसंघचालक ने कहा कि आंदोलन को यह मानकर आगे बढ़ाया जाए कि इसे हर हाल में सफल करना है, चाहे फिर कितना भी संघर्ष और त्याग करना पड़े। साथ ही उन्होंने यह भी कह दिया कि लक्ष्य प्राप्ति में कम से कम 30 से 40 वर्ष लगेंगे। बाला साहब की दोनों बातें सत्य हुईं। संघ ने विश्व हिन्दू परिषद को आगे कर आंदोलन का परोक्ष नेतृत्व किया। इसे संकल्प से सिद्धि तक पहुंचाया। दूसरी ये कि आंदोलन की अनुमति सरसंघचालक जी ने 1983 के शीत शिविर में दी, और विधिवत आंदोलन को विश्व हिन्दू परिषद ने 1984 में दिल्ली धर्म संसद के बाद अपने हाथ में ले लिया। इस अवधि का आकलन करें तो 2024 तक 40 वर्ष पूर्ण होते हैं। श्रीराम जन्मभूमि की मुक्ति के लिए पश्चिम उत्तर प्रदेश में आंदोलन 1982 में ही आरम्भ हो गया था,जब काशीपुर में 22 नवंबर 1982 को पहला हिंदू सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में तीनों धर्मस्थल अयोध्या,मथुरा,काशी की मुक्ति की मांग दाऊ दयाल खन्ना ने प्रस्ताव प्रस्तुत करके की थी।

लेकिन बाद में संघ से अनुमति मिलने के बाद मुजफ्फरनगर हिन्दू सम्मेलन 6 मार्च 1983 में तत्कालीन सह सरकार्यवाह प्रो. राजेंद्र सिंह उर्फ रज्जू भैया उपस्थित हुए। यहां पूर्व प्रधान मंत्री गुलजारी लाल नंदा को भी आमंत्रित किया गया। सम्मेलन में रज्जू भैया की उपस्थिति यूं ही नहीं थी, वे संघ की योजनानुसार सम्मिलित हुए थे।

इसके बाद भी कई हिन्दू सम्मेलन श्री रामजन्भूमि की मुक्ति की मांग को लेकर हुए। इनमें 1 मई 1983 पीलीभीत, 9 अक्टूबर 1983 अमरोहा, 23 अक्टूबर 1983 कानपुर, 1 अप्रैल 1984 बरेली सम्मेलन प्रमुख हैं। सभी में रामजन्भूमि पर लगा ताला खोलने की मांग हुई।

वर्ष 1984 में संघ ने आंदोलन की कमान विश्व हिन्दू परिषद को सौंपने का महत्वपूर्ण और दूरगामी लक्ष्य प्राप्ति के संकल्प के लिए निर्णय लिया। यह

संघ के सरसंघचालक से आंदोलन की सफलता और संघ का मार्गदर्शन मांगने वालों में मुरादाबाद के दो सूत्रधार थे, एक मुरादाबाद के पूर्व विभाग प्रचारक और तत्कालीन हिन्दू जागरण मंच के पश्चिम उत्तर प्रदेश के संयोजक दिनेश चंद्र त्यागी (शिक्षा एम. एससी फिजिक्स) , दूसरे कांग्रेस के प्रखर नेता पूर्व मंत्री,तीन बार कांग्रेस से विधायक रहे मुरादाबाद निवासी दाऊदयाल खन्ना।

निर्णय आसान नहीं था क्योंकि संघ ने अपने एक महत्वपूर्ण संगठन को एक ऐसे आंदोलन के लिए दांव पर लगा दिया था,जिसकी सफलता की राह बहुत कठिन थी,संघर्ष बहुत लंबा था। सुयोग्य,साहसी,समर्पित प्रचारकों की एक बड़ी

दिल्ली के विज्ञान भवन में हुई धर्म संसद के बाद संघ ने अपने सुयोग्य,धर्मनिष्ठ परिवार में जन्मे,वेद,वेदांत के अध्येता और ज्ञानी अशोक सिंहल को विश्व हिन्दू परिषद में भेजा। वे उस समय दिल्ली के प्रांत प्रचारक थे। पश्चिम उत्तर प्रदेश से विज्ञान विषय में उच्च शिक्षित प्रचारक चंपतराय को आंदोलन को समर्पित कर दिया।

टीम की आवश्यकता थी। लेकिन संघ ने हिंदू समाज के स्वाभिमान की रक्षा के लिए ये निर्णय किया।

दिल्ली के विज्ञान भवन में हुई धर्म संसद के बाद संघ ने अपने सुयोग्य,धर्मनिष्ठ परिवार में जन्मे,वेद,वेदांत के अध्येता और ज्ञानी अशोक सिंहल को विश्व हिन्दू परिषद में भेजा। वे उस समय दिल्ली के प्रांत प्रचारक थे। पश्चिम उत्तर प्रदेश से विज्ञान विषय में उच्च शिक्षित प्रचारक चंपतराय को आंदोलन को समर्पित कर दिया। इनके अलावा गिरिराज किशोर, ओंकार भावे, सूर्यकृष्ण,श्यामजी गुप्त, राजेंद्र सिंह पंकज,उमाशंकर, पुरुषोत्तम नारायण सिंह,तुलसीराम नाना भागवत,सदानंद काकडे, गुरुजन सिंह,सूबेदार सिंह सरीखे प्रखर प्रचारकों की एक बड़ी टीम संघ से विहिप में भेजी गई। इसके साथ ही संघ में रहकर वरिष्ठ प्रचारक

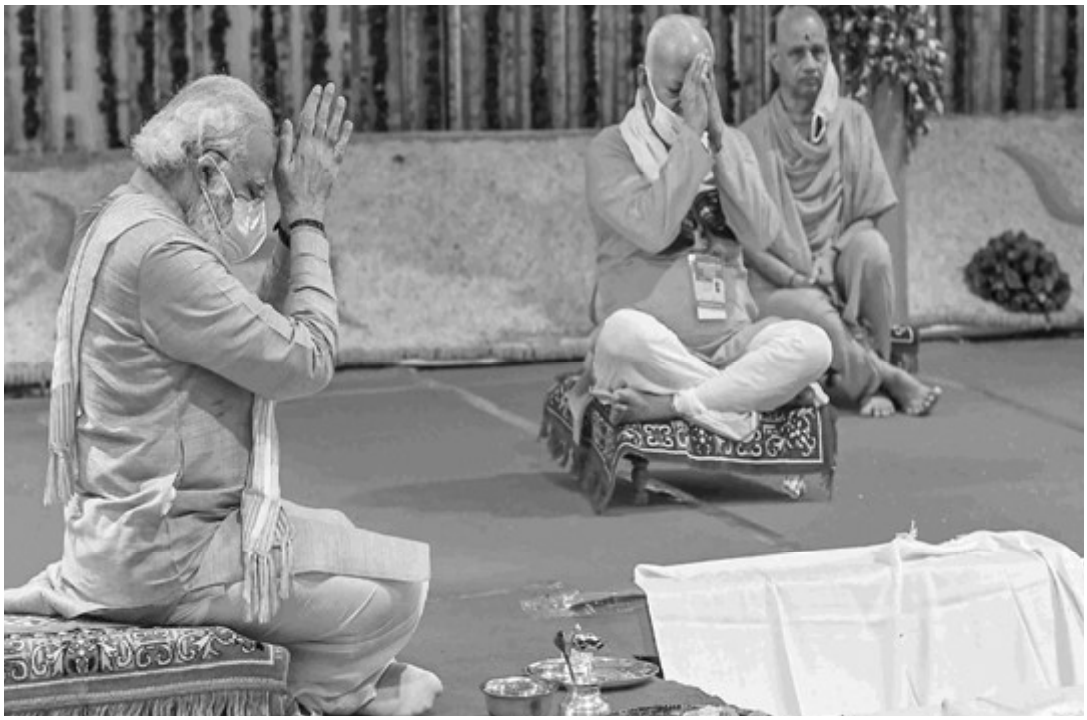

मोरोपंत पिंगले ने आंदोलन की योजना और रचना की। वे विहिप के मार्गदर्शक बनाए गए। मोरोपंत जी की ही योजना से विहिप ने एकात्मकता यात्राएं निकाल कर जन जागरण किया। राम ज्योति और शिला पूजन जैसे आयोजन हुए। इन कार्यक्रमों ने हिंदू समाज की सुप्तावस्था में रही शाश्वत चेतना और स्वाभिमान को जगा दिया। फलस्वरूप जागरूक समाज ने वर्ष 1990 और 1992 में अपने इष्ट के मंदिर निर्माण के लिए कूच कर दिया। दो बार कारसेवा संपन्न हुई।

आंदोलन में दो अलग अलग मोर्चों पर संघर्ष की रणनीति विहिप ने बनाई। एक थी प्रत्यक्ष आंदोलन, यानि सभा,सम्मेलन,प्रदर्शन,गोष्ठी,धार्मिक आयोजन, धर्म संसद, संत सम्मेलन आदि। दूसरी न्यायालय में विचाराधीन वादों की सुव्यवस्थित ढंग से पैरवी करना। इन वादों के लिए तथ्य जुटाना,गवाही कराना, अच्छे अधिवक्ताओं की एक बड़ी टीम जुटाना। आंदोलन को दिशा देने और संत समाज को एक जुट करके आंदोलन का अगुआ बनाने का काम अशोक सिंहल जी की प्रतिभा से संपन्न हो सका था। भारत के विभिन्न मत,पंथ,संप्रदायों के संतों महंतों को एकजुट करना कोई आसान काम नहीं था। लेकिन अशोक जी ने ये किया। वे इसलिए भी सफल हुए क्योंकि स्वयं भी संत प्रकृति और प्रवृत्ति के थे। इसलिए उनकी वाणी का अद्‌भुत प्रभाव था। उनके आग्रह को कोई टाल नहीं सकता था। वे श्वेत वस्त्रधारी संत थे।

जितना मुश्किल राम जन्मभूमि आंदोलन चलाना था,उससे भी मुश्किल था, न्यायालयों का संघर्ष। इस मोर्चे को विहिप में विभिन्न दायित्व पर रहे चंपतराय ने संभाला। यूं तो वे प्रांत मंत्री,अखिल भारतीय मंत्री,संयुक्त मंत्री, महामंत्री रहे और अब उपाध्यक्ष तथा श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महामंत्री हैं। लेकिन वे हमेशा परिदृश्य से ओझल रहकर कार्य करते रहे हैं। अशोक जी के असामयिक परलोक गमन के बाद और कार्यकारी अध्यक्ष डॉ प्रवीण तोगड़िया के साथ विहिप के टकराव से विषम स्थिति उत्पन्न हुई थी। ऐसे समय में महामंत्री

सर्वोच्च न्यायालय में मुकदमे की पैरवी के लिए चंपत जी अच्छे से अच्छे अधिवक्ताओं को जुटा रहे थे। उनकी बैठकें करते थे। साक्ष्य भी जुटाते थे। एक एक पेपर की फोटो कॉपी कराने से लेकर उसे समय पर न्यायालय में पहुंचवाना। सभी अधिवक्ताओं की चिंता। हर तारीख पर सजग और गंभीर रहना । वे हर तारीख को निर्णायक मानकर तैयारी करते थे, मानो उसी दिन फैसला होना हो। इन प्रयासों का प्रतिफल था न्यायलय का 9 नवंबर 2019 का फैसला।

के रूप में चंपत जी ने विहिप को कुशल नेतृत्व प्रदान किया। डा तोगड़िया का विहिप से अलग होकर नया संगठन बनाना एक बड़ी घटना थी। चूंकि विहिप राम मंदिर आंदोलन की कमान संभाल रही थी इसलिए उस समय चंपत जी का चमत्कारिक नेतृत्व सफल हुआ,आंदोलन पर इस घटना का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह समय कितना कठिन था इसका मुझे प्रत्यक्ष अनुभव है क्योंकि तब संयोग से मैं दिल्ली में आरके पुरम विहिप कार्यालय पर चंपत जी के पास अक्सर मिलने जाता था। हालांकि तोगड़िया जी ने भी ऐसा कोई काम नहीं किया जिससे राम जन्मभूमि आंदोलन में कोई बाधा होती। उनका प्रतिरोध सिर्फ संगठन स्तर तक था।

सर्वोच्च न्यायालय में मुकदमे की पैरवी के लिए चंपत जी अच्छे से अच्छे अधिवक्ताओं को जुटा रहे थे। उनकी बैठकें करते थे। साक्ष्य भी जुटाते थे। एक एक पेपर की फोटो कॉपी कराने से लेकर उसे समय पर न्यायालय में पहुंचवाना। सभी अधिवक्ताओं की चिंता। हर तारीख पर सजग और गंभीर रहना ।

वे हर तारीख को निर्णायक मानकर तैयारी करते थे, मानो उसी दिन फैसला होना हो। इन प्रयासों का प्रतिफल था न्यायलय का 9 नवंबर 2019 का फैसला।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डा मोहन भागवत ने गत दिनों अगर ये कहा कि वास्तविक आजादी 22 जनवरी 2024 को मंदिर निर्माण के रूप में मिली तो ये सही ही कहा। क्योंकि श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन किसी भी मायने में स्वतंत्रता संग्राम से कम महत्व का नहीं था। इसमें 500 साल की प्रतीक्षा के बाद सांस्कृतिक,आध्यात्मिक गौरव पुनः प्राप्त हुआ। हम 15 अगस्त 1947 को सिर्फ राजनीतिक, प्रशासनिक स्वतंत्रता प्राप्त कर सके थे। लेकिन सांस्कृतिक मुक्ति और स्वतंत्रता वास्तव में राम मंदिर के रूप में प्राप्त हुई।

आदर्श नगर पंचायत
तम्बौर अहमदाबाद–सीतापुर

76वें गणतंत्र दिवस (26 जनवरी 2025) के शुभ अवसर पर नगर पंचायत अपने नागरिकों का हार्दिक अभिनन्दन करती है। नगरवासियों को समुचित सुविधाएं उपलब्ध कराने हेतु संकल्पबद्ध होने के साथ–साथ अपने नागरिकों से अपेक्षा रखती है कि–

1 प्रतिबंधित सिंगिल यूज प्लास्टिक का प्रयोग न करें और न ही दूसरों को करने दें। विक्रय करते पाये जाने पर आपके विरुद्ध रूपये 25000 तक का जुर्माना हो सकता है।
2 डोर टू डोर कूडा कलेक्शन के अन्तर्गत कर्मचारी आपके घरों पर पहुंच रहे हैं। कृपया अपना कूड़ा (सूखा नीले डस्टबिन में व गीला हरे डस्टबिन में) अलग अलग कर उन्हें दें। सडक या नाली में न डालें।
3 नगर की शिकायत दर्ज करने हेतु टोल फ्री नम्बर 1533 पर काल करें।
4 नगर पंचायत तम्बौर अहमदाबाद के अन्तर्गत बने सामुदायिक/सार्वजनिक शौचालय समस्त नागरिकों के लिए निःशुल्क खुले रहेंगे। कृपया शौचालयों का ही प्रयोग करें।
5 सेप्टिक टैंक सफाई हेतु टोल फ्री नम्बर 14420/9260900188 पर काल करें। प्रत्येक तीन साल में सेप्टिक टैंक की सफाई अवश्य कराएँ।
6 खुले में शौच व मूत्र न करे। घर में बने शौचालय या सार्वजनिक शौचालय व मूत्रालय का ही प्रयोग करें।
7 Swachhta Mohua App का प्रयोग करें तथा अपने आस–पास की गंदगी की आनलाइन शिकायत दर्ज करें।
8 स्वच्छ सर्वेक्षण में आपका शहर प्रतिभाग कर रहा है। शहर को अच्छी रैंकिंग दिलाने हेतु नगर पंचायत का सहयोग करें।
9 पेड पौधे लगाकर पर्यावरण को स्वच्छ रखें।
10 आपके शहर में रीडियूस, रीयूज रिसाइकिल केन्द्र त्त्त ब्म्छज्म्त मो. शेखन टोला तम्बौर में स्थित है।
11 नगर पंचायत के समस्त करों को समय से अदा करें।

नगर पंचायत आपकी सेवा में तत्पर है।

प्रदीप कुमार गौतम
अधिशासी अधिकारी

तययबुन
अध्यक्ष

समस्त सम्मानित सदस्यगण
आदर्श नगर पंचायत तम्बौर अहमदाबाद–सीतापुर

अयोध्या में नवनिर्मित श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का मूल भाषण

22 जनवरी केवल एक तारीख नहीं, यह नए काल चक्र का उद्गम है

सियावर रामचंद्र की जय।
सियावर रामचंद्र की जय।

श्रद्धेय मंच, सभी संत एवं ऋषिगण, यहां उपस्थित और विश्व के कोने–कोने में हम सबके साथ जुड़े हुए सभी रामभक्त, आप सबको प्रणाम, सबको राम–राम।

आज हमारे राम आ गए हैं! सदियों की प्रतीक्षा के बाद हमारे राम आ गए हैं। सदियों का अभूतपूर्व धैर्य, अनगिनत बलिदान, त्याग और तपस्या के बाद हमारे प्रभु राम आ गये हैं। इस शुभ घड़ी की आप सभी को,समस्त देशवासियों को, बहुत–बहुत बधाई।

मैं अभी गर्भगृह में ईश्वरीय चेतना का साक्षी बनकर आपके सामने उपस्थित हुआ हूँ। कितना कुछ कहने को है... लेकिन कंठ अवरुद्ध है। मेरा शरीर अभी भी स्पंदित है, चित्त अभी भी उस पल में लीन है। हमारे रामलला अब टेंट में नहीं रहेंगे। हमारे रामलला अब इस दिव्य मंदिर में रहेंगे। मेरा पक्का विश्वास है, अपार श्रद्धा है कि जो घटित हुआ है, इसकी अनुभूति, देश के, विश्व के, कोने–कोने में रामभक्तों को हो रही होगी। ये क्षण अलौकिक है। ये पल पवित्रतम है। ये माहौल, ये वातावरण, ये ऊर्जा, ये घड़ी... प्रभु श्रीराम का हम सब पर आशीर्वाद है। 22 जनवरी, 2024 का ये सूरज एक अद्भुत आभा लेकर आया है। 22 जनवरी, 2024, ये कैलेंडर पर लिखी एक तारीख नहीं। ये एक नए कालचक्र का उद्गम है। राम मंदिर के भूमिपूजन के बाद से प्रतिदिन पूरे देश में उमंग और उत्साह बढ़ता ही जा रहा था।

निर्माण कार्य देख, देशवासियों में हर दिन एक नया विश्वास पैदा हो रहा था। आज हमें सदियों के उस धैर्य की धरोहर मिली है, आज हमें श्रीराम का मंदिर मिला है। गुलामी की मानसिकता को तोड़कर उठ खड़ा हो रहा राष्ट्र, अतीत के हर दंश से हौसला लेता हुआ राष्ट्र, ऐसे ही नव इतिहास का सृजन करता है। आज से हजार साल बाद भी लोग आज की इस तारीख की, आज के इस पल की चर्चा करेंगे। और ये कितनी बड़ी रामकृपा है कि हम इस पल को जी रहे हैं, इसे साक्षात घटित होते देख रहे हैं। आज दिन–दिशाएँ... दिग–दिगंत... सब दिव्यता से परिपूर्ण हैं। ये समय, सामान्य समय नहीं है। ये काल के चक्र पर सर्वकालिक स्याही से अंकित हो रहीं अमिट स्मृति रेखाएँ हैं।

साथियों,

हम सब जानते हैं कि जहां राम का काम होता है, वहाँ पवनपुत्र हनुमान अवश्य विराजमान होते हैं। इसलिए, मैं रामभक्त हनुमान और हनुमानगढ़ी को भी प्रणाम करता हूँ। मैं माता जानकी, लक्ष्मण जी, भरत–शत्रुघ्न, सबको नमन करता हूं। मैं पावन अयोध्या पुरी और पावन सरयू को भी प्रणाम करता हूँ। मैं इस पल दैवीय अनुभव कर रहा हूँ कि जिनके आशीर्वाद से ये महान कार्य पूरा हुआ है... वे दिव्य आत्माएँ, वे दैवीय विभूतियाँ भी इस समय हमारे आस–पास उपस्थित हैं। मैं इन सभी दिव्य चेतनाओं को भी कृतज्ञता पूर्वक नमन करता हूँ। मैं आज प्रभु श्रीराम से क्षमा याचना भी करता हूं। हमारे पुरुषार्थ, हमारे त्याग, तपस्या में कुछ तो कमी रह गयी होगी कि हम इतनी सदियों तक ये कार्य कर नहीं पाए। आज वो कमी पूरी हुई है। मुझे विश्वास है, प्रभु राम आज हमें अवश्य क्षमा करेंगे।

मेरे प्यारे देशवासियों,

त्रेता में राम आगमन पर तुलसीदास जी ने लिखा है– प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी। जनित वियोग बिपति सब नासी। अर्थात प्रभु का आगमन देखकर ही सब अयोध्यावासी, समग्र देशवासी हर्ष से भर गए। लंबे वियोग से जो आपत्ति आई थी, उसका अंत हो गया। उस कालखंड में तो वो वियोग केवल 14 वर्षों का था, तब भी इतना असह्य था। इस युग में तो अयोध्या और देशवासियों ने सैकड़ों वर्षों का वियोग सहा है। हमारी कई–कई पीढ़ियों ने वियोग सहा है। भारत के तो संविधान में, उसकी पहली प्रति में, भगवान राम विराजमान हैं। संविधान के अस्तित्व में आने के बाद भी दशकों तक प्रभु श्रीराम के अस्तित्व को लेकर कानूनी लड़ाई चली। मैं आभार व्यक्त करूंगा भारत की न्यायपालिका का, जिसने न्याय की लाज रख ली। न्याय के पर्याय प्रभु राम का मंदिर भी न्यायबद्ध तरीके से ही बना।

आज हमें सदियों के उस धैर्य की धरोहर मिली है, आज हमें श्रीराम का मंदिर मिला है। गुलामी की मानसिकता को तोड़कर उठ खड़ा हो रहा राष्ट्र, अतीत के हर दंश से हौसला लेता हुआ राष्ट्र, ऐसे ही नव इतिहास का सृजन करता है। आज से हजार साल बाद भी लोग आज की इस तारीख की, आज के इस पल की चर्चा करेंगे। और ये कितनी बड़ी रामकृपा है कि हम इस पल को जी रहे हैं, इसे साक्षात घटित होते देख रहे हैं। आज दिन–दिशाएँ... दिग–दिगंत... सब दिव्यता से परिपूर्ण हैं। ये समय, सामान्य समय नहीं है। ये काल के चक्र पर सर्वकालिक स्याही से अंकित हो रहीं अमिट स्मृति रेखाएँ हैं।

साथियों,

आज गाँव–गाँव में एक साथ कीर्तन, संकीर्तन हो रहे हैं। आज मंदिरों में उत्सव हो रहे हैं, स्वच्छता अभियान चलाए जा रहे हैं। पूरा देश

आज दीवाली मना रहा है। आज शाम घर–घर राम ज्योति प्रज्वलित करने की तैयारी है। कल मैं श्रीराम के आशीर्वाद से धनुषकोडि में रामसेतु के आरंभ बिंदु अरिचल मुनाई पर था। जिस घड़ी प्रभु राम समुद्र पार करने निकले थे वो एक पल था जिसने कालचक्र को बदला था। उस भावमय पल को महसूस करने का मेरा ये विनम्र प्रयास था। वहां पर मैंने पुष्प वंदना की। वहां मेरे भीतर एक विश्वास जगा कि जैसे उस समय कालचक्र बदला था उसी तरह अब कालचक्र फिर बदलेगा और शुभ दिशा में बढ़ेगा। अपने 11 दिन के व्रत–अनुष्ठान के दौरान मैंने उन स्थानों का चरण स्पर्श करने का प्रयास किया, जहां प्रभु राम के चरण पड़े थे। चाहे वो नासिक का पंचवटी धाम हो, केरला का पवित्र त्रिप्रायर मंदिर हो, आंध्र प्रदेश में लेपाक्षी हो, श्रीरंगम में रंगनाथ स्वामी मंदिर हो, रामेश्वरम में श्री रामनाथ स्वामी मंदिर हो, या फिर धनुषकोडि..मेरा सौभाग्य है कि इसी पुनीत पवित्र भाव के साथ मुझे सागर से सरयू तक की यात्रा का अवसर मिला। सागर से सरयू तक, हर जगह राम नाम का वही उत्सव भाव छाया हुआ है। प्रभु राम तो भारत की आत्मा के कण–कण से जुड़े हुए हैं। राम, भारतवासियों के अंतर्मन में विराजे हुए हैं। हम भारत में कहीं भी, किसी की अंतरात्मा को छुएंगे तो इस एकत्व की अनुभूति होगी, और यही भाव सब जगह मिलेगा। इससे उत्कृष्ट, इससे अधिक, देश को समायोजित करने वाला सूत्र और क्या हो सकता है?

मेरे प्यारे देशवासियों!

मुझे देश के कोने–कोने में अलग–अलग भाषाओं में रामायण सुनने का अवसर मिला है, लेकिन विशेषकर पिछले 11 दिनों में रामायण अलग–अलग भाषा में, अलग–अलग राज्यों से मुझे विशेष रूप से सुनने का सौभाग्य मिला। राम को परिभाषित करते हुये ऋषियों ने कहा है– **रमन्ते यस्मिन् इति रामः** अर्थात जिसमें रम जाया जाए, वही राम है। राम लोक की स्मृतियों में, पर्व से लेकर परम्पराओं में, सर्वत्र समाये हुए हैं। हर युग में लोगों ने राम को जिया है। हर युग में लोगों ने अपने–अपने शब्दों में, अपनी–अपनी तरह से राम को अभिव्यक्त किया है। और ये रामरस, जीवन प्रवाह की तरह निरंतर बहता रहता है। प्राचीन काल से भारत के हर कोने के लोग रामरस का आचमन करते

ये मंदिर, मात्र एक देव मंदिर नहीं है। ये भारत की दृष्टि का, भारत के दर्शन का, भारत के दिग्दर्शन का मंदिर है। ये राम के रूप में राष्ट्र चेतना का मंदिर है। राम भारत की आस्था हैं, राम भारत का आधार हैं। राम भारत का विचार हैं, राम भारत का विधान हैं। राम भारत की चेतना हैं, राम भारत का चिंतन हैं। राम भारत की प्रतिष्ठा हैं, राम भारत का प्रताप हैं। राम प्रवाह हैं, राम प्रभाव हैं। राम नेति भी हैं। राम नीति भी हैं। राम नित्यता भी हैं। राम निरंतरता भी हैं। राम विभु हैं, विशद हैं। राम व्यापक हैं, विश्व हैं, विश्वात्मा हैं।

रहे हैं। रामकथा असीम है, रामायण भी अनंत हैं। राम के आदर्श, राम के मूल्य, राम की शिक्षाएं, सब जगह एक समान हैं।

प्रिय देशवासियों,

आज इस ऐतिहासिक समय में देश उन व्यक्तित्वों को भी याद कर रहा है, जिनके कार्यों और समर्पण की वजह से आज हम ये शुभ दिन देख रहे हैं। राम के इस काम में कितने ही लोगों ने त्याग और तपस्या की पराकाष्ठा करके दिखाई है। उन अनगिनत रामभक्तों के, उन अनगिनत कारसेवकों के और उन अनगिनत संत महात्माओं के हम सब ऋणी हैं।

साथियों,

आज का ये अवसर उत्सव का क्षण तो है ही, लेकिन इसके साथ ही ये क्षण भारतीय समाज की परिपक्वता के बोध का क्षण भी है। हमारे लिए ये अवसर सिर्फ विजय का नहीं, विनय का भी है। दुनिया का इतिहास साक्षी है कि कई राष्ट्र अपने ही इतिहास में उलझ जाते हैं। ऐसे देशों ने जब भी अपने इतिहास की उलझी हुई गांठों को खोलने का प्रयास किया, उन्हें सफलता पाने में बहुत कठिनाई आई। बल्कि कई बार तो पहले से ज्यादा मुश्किल परिस्थितियां बन गईं। लेकिन हमारे देश ने इतिहास की इस गांठ को जिस गंभीरता और भावुकता के साथ खोला है, वो ये बताती है कि हमारा भविष्य हमारे अतीत से बहुत सुंदर होने जा रहा है। वो भी एक समय था, जब कुछ लोग कहते थे कि राम मंदिर बना तो आग लग जाएगी। ऐसे लोग भारत के सामाजिक भाव की पवित्रता को नहीं जान पाए। रामलला के इस मंदिर का निर्माण, भारतीय समाज के शांति, धैर्य, आपसी सद्भाव और समन्वय का भी प्रतीक है। हम देख रहे हैं, ये निर्माण किसी आग को नहीं, बल्कि ऊर्जा को जन्म दे रहा है। राम मंदिर समाज के हर वर्ग को एक उज्जवल भविष्य के पथ पर बढ़ने की प्रेरणा लेकर आया है। मैं आज उन लोगों से आह्वान करूंगा... आईये, आप महसूस कीजिए, अपनी सोच पर पुनर्विचार कीजिए। राम आग नहीं है, राम ऊर्जा हैं। राम विवाद नहीं, राम समाधान हैं। राम सिर्फ हमारे नहीं हैं, राम तो सबके हैं। राम वर्तमान ही नहीं, राम अनंतकाल हैं।

साथियों,

आज जिस तरह राममंदिर प्राण प्रतिष्ठा के इस आयोजन से पूरा विश्व जुड़ा हुआ है, उसमें राम की सर्वव्यापकता के दर्शन हो रहे हैं। जैसा उत्सव भारत में है, वैसा ही अनेकों देशों में है। आज अयोध्या का ये उत्सव रामायण की उन वैश्विक परम्पराओं का भी उत्सव बना है। रामलला की ये प्रतिष्ठा 'वसुधैव कुटुंबकम' के विचार की भी प्रतिष्ठा है।

साथियों,

आज अयोध्या में, केवल श्रीराम के विग्रह रूप की प्राण प्रतिष्ठा नहीं हुई है। ये श्रीराम के रूप में साक्षात् भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट विश्वास

की भी प्राण प्रतिष्ठा है। ये साक्षात् मानवीय मूल्यों और सर्वोच्च आदर्शों की भी प्राण प्रतिष्ठा है। इन मूल्यों की, इन आदर्शों की आवश्यकता आज सम्पूर्ण विश्व को है। **सर्वे भवन्तु सुखिनः** ये संकल्प हम सदियों से दोहराते आए हैं। आज उसी संकल्प को राममंदिर के रूप में साक्षात् आकार मिला है। ये मंदिर, मात्र एक देव मंदिर नहीं है। ये भारत की दृष्टि का, भारत के दर्शन का, भारत के दिग्दर्शन का मंदिर है। ये राम के रूप में राष्ट्र चेतना का मंदिर है। राम भारत की आस्था हैं, राम भारत का आधार हैं। राम भारत का विचार हैं, राम भारत का विधान हैं। राम भारत की चेतना हैं, राम भारत का चिंतन हैं। राम भारत की प्रतिष्ठा हैं, राम भारत का प्रताप हैं। राम प्रवाह हैं, राम प्रभाव हैं। राम नेति भी हैं। राम नीति भी हैं। राम नित्यता भी हैं। राम निरंतरता भी हैं। राम विभु हैं, विशद हैं। राम व्यापक हैं, विश्व हैं, विश्वात्मा हैं। और इसलिए, जब राम की प्रतिष्ठा होती है, तो उसका प्रभाव वर्षों या शताब्दियों तक ही नहीं होता। उसका प्रभाव हजारों वर्षों के लिए होता है। महर्षि वाल्मीकि ने कहा है– राज्यम् दश सहस्राणि प्राप्य वर्षाणि राघवः। अर्थात, राम दस हजार वर्षों के लिए राज्य पर प्रतिष्ठित हुए। यानी हजारों वर्षों के लिए रामराज्य स्थापित हुआ। जब त्रेता में राम आए थे, तब हजारों वर्षों के लिए रामराज्य की स्थापना हुई थी। हजारों वर्षों तक राम विश्व पथप्रदर्शन करते रहे थे। और इसलिए मेरे प्यारे देशवासियों, आज अयोध्या भूमि हम सभी से, प्रत्येक रामभक्त से, प्रत्येक भारतीय से कुछ सवाल कर रही है। श्रीराम का भव्य मंदिर तो बन गया...अब आगे क्या? सदियों का इंतजार तो खत्म हो गया... अब आगे क्या? आज के इस अवसर पर जो दैव, जो दैवीय आत्माएं हमें आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित हुई हैं, हमें देख रही हैं, उन्हें क्या हम ऐसे ही विदा करेंगे? नहीं, कदापि नहीं। आज मैं पूरे पवित्र मन से महसूस कर रहा हूं कि कालचक्र बदल रहा है। ये सुखद संयोग है कि हमारी पीढ़ी को एक कालजयी पथ के शिल्पकार के रूप में चुना गया है। हजार वर्ष बाद की पीढ़ी, राष्ट्र निर्माण के हमारे आज के कार्यों को याद करेगी। इसलिए मैं कहता हूं– **यही समय है, सही समय है। हमें आज से, इस पवित्र समय से, अगले एक हजार साल के भारत की नींव रखनी है।** मंदिर निर्माण से आगे बढ़कर अब हम सभी देशवासी, यहीं इस पल से समर्थ–सक्षम, भव्य–दिव्य भारत के निर्माण की सौगंध लेते हैं। राम के विचार, 'मानस के साथ ही जनमानस' में भी हों, यही राष्ट्र निर्माण की सीढ़ी है।

साथियों,

आज के युग की मांग है कि हमें अपने अंतःकरण को विस्तार देना होगा। हमारी चेतना का विस्तार... देव से देश तक, राम से राष्ट्र तक होना चाहिए। हनुमान जी की भक्ति, हनुमान जी की सेवा, हनुमान जी का समर्पण, ये ऐसे गुण हैं जिन्हें हमें बाहर नहीं खोजना पड़ता। प्रत्येक भारतीय में भक्ति, सेवा और समर्पण के ये भाव, समर्थ–सक्षम,भव्य–दिव्य भारत का आधार बनेंगे। और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार ! दूर–सुदूर जंगल में कुटिया में जीवन गुजारने वाली मेरी आदिवासी मां शबरी का ध्यान आते ही, अप्रतिम विश्वास जागृत होता है। मां शबरी तो कबसे कहती थीं– राम आएंगे। प्रत्येक भारतीय में जन्मा यही विश्वास, समर्थ–सक्षम, भव्य–दिव्य भारत का आधार बनेगा। और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार! हम सब जानते हैं कि निषादराज की मित्रता, सभी बंधनों से परे है। निषादराज का राम के प्रति सम्मोहन, प्रभु राम का निषादराज के लिए अपनापन कितना मौलिक है। सब अपने हैं, सभी समान हैं। प्रत्येक भारतीय में अपनत्व की, बंधुत्व की ये भावना, समर्थ–सक्षम, भव्य–दिव्य भारत का आधार बनेगी। और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना

का विस्तार!

साथियों,

आज देश में निराशा के लिए रत्तीभर भी स्थान नहीं है। मैं तो बहुत सामान्य हूं, मैं तो बहुत छोटा हूं, अगर कोई ये सोचता है, तो उसे गिलहरी के योगदान को याद करना चाहिए। गिलहरी का स्मरण ही हमें हमारी इस हिचक को दूर करेगा, हमें सिखाएगा कि छोटे–बड़े हर प्रयास की अपनी ताकत होती है, अपना योगदान होता है। और सबके प्रयास की यही भावना, समर्थ–सक्षम, भव्य–दिव्य भारत का आधार बनेगी। और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार!

साथियों,

लंकापति रावण, प्रकांड ज्ञानी थे, अपार शक्ति के धनी थे। लेकिन जटायु जी की मूल्य निष्ठा देखिए, वे महाबली रावण से भिड़ गए। उन्हें भी पता था कि वो रावण को परास्त नहीं कर पाएंगे। लेकिन फिर भी उन्होंने रावण को चुनौती दी। कर्तव्य की यही पराकाष्ठा समर्थ–सक्षम, भव्य–दिव्य भारत का आधार है। और यही तो है, देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार। आइए, हम संकल्प लें कि राष्ट्र निर्माण के लिए हम अपने जीवन का पल–पल लगा देंगे। रामकाज से राष्ट्रकाज, समय का पल–पल, शरीर का कण–कण, राम समर्पण को राष्ट्र समर्पण के ध्येय से जोड़ देंगे।

मेरे देशवासियों,

प्रभु श्रीराम की हमारी पूजा, विशेष होनी चाहिए। ये पूजा, स्व से ऊपर उठकर समष्टि के लिए होनी चाहिए। ये पूजा, अहम से उठकर वयम के लिए होनी चाहिए। प्रभु को जो भोग चढ़ेगा, वो विकसित भारत के लिए हमारे परिश्रम की पराकाष्ठा का प्रसाद भी होगा। हमें नित्य पराक्रम, पुरुषार्थ, समर्पण का प्रसाद प्रभु राम को चढ़ाना होगा। इनसे नित्य प्रभु राम की पूजा करनी होगी, तब हम भारत को वैभवशाली और विकसित बना पाएंगे।

मेरे प्यारे देशवासियों,

ये भारत के विकास का अमृतकाल है। आज भारत युवा शक्ति की पूंजी से भरा हुआ है, ऊर्जा से भरा हुआ है। ऐसी सकारात्मक परिस्थितियां, फिर ना जाने कितने समय बाद बनेंगी। हमें अब चूकना नहीं है, हमें अब बैठना नहीं है। मैं अपने देश के युवाओं से कहूंगा। आपके सामने हजारों वर्षों की परंपरा की प्रेरणा है। आप भारत की उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं...जो चांद पर तिरंगा लहरा रही है, जो 15 लाख किलोमीटर की यात्रा करके, सूर्य के पास जाकर मिशन आदित्य को सफल बना रही है, जो आसमान में तेजस... सागर में विक्रांत...का परचम लहरा रही है। अपनी विरासत पर गर्व करते हुए आपको भारत का नव प्रभात लिखना है। परंपरा की पवित्रता और आधुनिकता की अनंतता, दोनों ही पथ पर चलते हुए भारत, समृद्धि के लक्ष्य तक पहुंचेगा।

मेरे साथियों,

आने वाला समय अब सफलता का है। आने वाला समय अब सिद्धि का है। ये भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा– भारत के उत्कर्ष का, भारत के उदय का, ये भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा– भव्य भारत के अभ्युदय का, विकसित भारत का! ये मंदिर सिखाता है कि अगर लक्ष्य, सत्य प्रमाणित हो, अगर लक्ष्य, सामूहिकता और संगठित शक्ति से जन्मा हो, तब उस लक्ष्य को प्राप्त करना असंभव नहीं है। ये भारत का समय है और भारत अब आगे बढ़ने वाला है। शताब्दियों की प्रतीक्षा के बाद हम यहां पहुंचे हैं। हम सब ने इस युग का, इस कालखंड का इंतजार किया है। अब हम रुकेंगे नहीं। हम विकास की ऊंचाई पर जाकर ही रहेंगे। इसी भाव के साथ रामलला के चरणों में प्रणाम करते हुए आप सभी को बहुत बहुत शुभकामनाएं। सभी संतों के चरणों में मेरे प्रणाम।

सियावर रामचंद्र की जय।
सियावर रामचंद्र की जय।
सियावर रामचंद्र की जय।

विशेष परिशिष्ट

जिला सहकारी बैंक मुरादाबाद ने बनाया कीर्तिमान

बैंकिंग प्रगति में मिला नेफस्कोब अवार्ड

मुरादाबाद। राष्ट्रीय सहकारी ग्रामीण बैंकों के परिसंघ 'नेशनल फेडरेशन आफ स्टेट को आपरेटिव बैंक्स लिमिटेड (नेफस्कोब)' के हीरक जयंती समारोह में मुरादाबाद जिला सहकारी बैंक को उत्कृष्ट ग्रामीण बैंकिंग के लिए देश भर में तृतीय स्थान प्राप्त हुआ है। बैंक के चेयरमैन चौधरी विजय भान सिंह को प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिन्ह नई दिल्ली के भारत मण्डपम में आयोजित हीरक जयंती समारोह में प्रदान किया गया। हीरक जयंती समारोह का उद्घाटन 26 नवम्बर 2024 को केन्द्रीय गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह ने किया था। इस अवसर पर नेफस्कोब के अध्यक्ष कुन्दरू रवीन्द्र राव ने श्री शाह का स्वागत किया। इसी समारोह में मुरादाबाद सहकारी बैंक को प्रतिष्ठित 'नेफस्कोब अवार्ड' मिला।

मुरादाबाद जिला सहकारी बैंक ने गत एक दशक में ग्रामीण बैंकिंग, ऋण–जमा अनुपात, किसानों को ऋण वितरण और अन्य विविध ऋणों का वितरण और बसूली में अच्छा रिकार्ड बनाया है। इसी का परिणाम है कि अध्यक्ष चौधरी विजय भान सिंह के नेतृत्व में बैंक ने उल्लेखनीय प्रगति की है। बैंक के चेयरमैन पद पर विराजमान होने के समय जिला सहकारी बैंक 8 करोड़ रूपये के घाटे में थी आज 30 करोड़ के लाभ में है। बैंक को इसके अलावा अपने जोन में भी सर्वश्रेष्ठ बैंक के लिए प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। नाबार्ड के मध्य भारत जोन में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ, उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड शामिल हैं। मध्य भारत जोन में ओवर आल परफारमेंस के लिए वेस्ट परफारमेंस अवार्ड भी जिला सहकारी बैंक मुरादाबाद को प्राप्त हुआ है। यह न केवल इस जनपद बल्कि पूरे मण्डल के लिए गौरव की अनुभूति कराता है। मुरादाबाद जिला सहकारी बैंक के अन्तर्गत मुरादाबाद, संभल और अमरोहा जनपद के सहकारी बैंक सम्मिलित हैं।

मुरादाबाद जिला सहकारी बैंक को सफलता की ऊंचाई पर पहुंचाने के लिए चेयरमैन चौधरी विजय भान सिंह के नेतृत्व, उपाध्यक्ष कुलदीप सिंह के सहयोग से बैंक प्रबंधन ने कार्यकुशलता, व्यवसायिकता, उच्च गुणवत्ता, परिश्रम और ग्रामीण जन मानस के प्रति सदाशयता और सकारात्मक दृष्टिकोण का परिचय दिया। बैंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और सचिव जय प्रताप सिंह, उप महाप्रबंधक गण सनव्वर अली, संजय कुमार, प्रेम सिंह और ढालगोपाल सिंह की टीम ने उपलब्धि हासिल करके बैंक के 119 वर्ष के इतिहास को गौरवान्वित किया है।

सनातन में नवचेतना का युग

डा जय पाल सिंह व्यस्त
सदस्य,विधान परिषद,उत्तर प्रदेश
बरेली–मुरादाबाद स्नातक क्षेत्र

संत विनोबा भावे से एक जिज्ञासु ने पूछा कि संस्कृति किसे कहते हैं। इसे सरल शब्दों में समझाइए, विनोबा जी ने एक उदाहरण देकर समझना शुरु किया। 'एक व्यक्ति को जितने खाने की आवश्यकता है उतना ही खाता है, उसे प्रकृति कहते हैं। आवश्यकता से अधिक खाता है तो उसे विकृति कहते हैं और आवश्यकता से कम खाने पर जो बचता है वह ऐसे व्यक्तियों में उपयोग करता है जिन्हें भोजन नहीं मिल पाता,उन्हें कराने पर इसे संस्कृति कहते हैं। मतलब संस्कृति में हमारे प्राण तत्व में सन्निहित हैं'।

मानवीय संवेदनाएं,सेवा का भाव,परमार्थवृत्ति ये सबकुछ उसके अंदर समाहित हैं। इसे ही हम मानवता कहते हैं इसे ही हम भारतीय संस्कार कहते हैं। और इसी को हम आध्यात्मिक मूल्य के रूप में जानते हैं। जैसे धर्म की सामान्य व्याख्या धर्म को धारण करने के आधार पर परिभाषित की गई है धार्मिक तात्विक विवेचन की विविध शाखाओं में से एक जीवन मूल्य दूसरे रूप में आध्यात्मिक मूल्य मानते हैं।

भारतीय सामाजिक संरचना,सामाजिक संबंध, सामाजिक सरोकार,इन्हीं जीवन मूल्यों की डोर से बंधे हैं। सामाजिक मिलन के सशक्त आधार हैं। भारतीय सामाजिक संरचना को जिस कलेंडर के आधार पर ऋषियों ने, आदि गुरु शंकराचार्य ने मार्गदर्शिका के रूप में प्रदान किया है।

मानवीय संवेदनाएं,सेवा का भाव,परमार्थवृत्ति ये सबकुछ उसके अंदर समाहित हैं। इसे ही हम मानवता कहते हैं इसे ही हम भारतीय संस्कार कहते हैं। और इसी को हम आध्यात्मिक मूल्य के रूप में जानते हैं। जैसे धर्म की सामान्य व्याख्या धर्म को धारण करने के आधार पर परिभाषित की गई है धार्मिक तात्विक विवेचन की विविध शाखाओं में से एक जीवन मूल्य दूसरे रूप में आध्यात्मिक मूल्य मानते हैं।

उसी का अनुसरण पूरा भारतीय समाज पूर्ण निष्ठा,समर्पण,आस्था,श्रद्धा और विश्वास के साथ करता चला आ रहा है। अपने देश के पर्व और त्योहारों का जो स्वरूप है वह पूरे समाज को एकसूत्र में बांधे रखने के लिए ही है। इन सबके मूल में सनातन है। सनातन आदि है, अनंत है। सनातन में वेद भी, शास्त्र भी,उपनिषद,गीता,रामायण,भागवत और महाभारत भी हैं। सनातन में आस्तिक भी हैं और नास्तिक भी हैं। इसलिए हमारे यहां कहा गया है 'एकम सद्विप्रः बहुदावदंती'। इसके अंदर सतयुग, द्वापर, त्रेता भी हैं। ये सनातन धर्म की पथ प्रदर्शिका

आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित व्यवस्थाओं के आधार पर संपूर्ण समाज में सनातन की ध्वजा सतत फहराती रहे। इसकी व्यवस्था की है। समस्त संत जनों की जीवन संरचना की भी एक सुदृढ़ नियमावली विद्यमान है। उसी के अंतर्गत अलग–अलग नाम से 13 अखाड़े कुंभ के अवसर पर अर्थात छह वर्ष के अंतराल पर सबका समागम,अर्थात सनातन पर विचार विमर्श,राष्ट्र धर्म और संस्कृति के विविध आयामों पर खुली चर्चा,चिंतन,मनन एवं निर्णय किए जाते हैं। जो राष्ट्र उपयोगी होते हैं।

हैं। उसी के क्रम में जीवन को सुखद और सुफल करने वाले विभिन्न प्रकार के पर्व त्यौहार जैसे कार्यक्रम हैं। भारतीय संस्कृति इसकी विरासत और धरोहर के रूप में भारतीय सनातन का गौरव प्रदर्शित करने वाले धाम हैं,ज्योतिर्लिंग है,मठ हैं। पर्वों के अंदर कुंभ भी अर्धकुंभ भी और महाकुंभ भी है। भारतीय समाज सनातन के पथ पर सदैव सदाचरण करता रहे। इसकी पूरी व्यवस्था की गई है।

धर्म का अंकुश

आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित व्यवस्थाओं के आधार पर संपूर्ण समाज में सनातन की ध्वजा सतत फहराती रहे। इसकी व्यवस्था की है। समस्त संत जनों की जीवन संरचना की भी एक सुदृढ़ नियमावली विद्यमान है। उसी के अंतर्गत अलग–अलग नाम से 13 अखाड़े कुंभ के अवसर पर अर्थात छह वर्ष के अंतराल पर सबका समागम,अर्थात सनातन पर विचार विमर्श,राष्ट्र धर्म और संस्कृति के विविध आयामों पर खुली चर्चा,चिंतन,मनन एवं निर्णय किए जाते हैं। जो राष्ट्र उपयोगी होते हैं।

कुंभ के संदर्भ में एक उदाहरण प्रस्तुत करना समीचीन रहेगा। देश के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन से एक विदेशी प्रतिनिधिमंडल भेंट करने पहुंचा। उस समय हरिद्वार में कुंभ का आयोजन हो रहा था। प्रतिनिधि मंडल ने वहां जाने एवं कुंभ देखने की

इच्छा व्यक्त की। राष्ट्रपति जी ने उन्हें वहां जाने की सहर्ष सहमति प्रदान की और वहां जाने की समुचित व्यवस्था करने के लिए संबंधित को निर्देश दिए। प्रतिनिधि मंडल कुंभ में तीन दिन रहा तथा समस्त क्षेत्र का भ्रमण किया, अवलोकन किया तथा वापस दिल्ली लौटकर पुनः महामहिम से मिला। उनसे कुंभ के अनुभव पर चर्चा की। व्यवस्थाओं की प्रशंसा की। इसके साथ ही उन्होंने एक जिज्ञासा व्यक्त की और, पूछा कि इतने भक्तों

यही है भारतीय संस्कृति। जो देश को एक सूत्र में जोड़े रखती है। उसका जीवंत प्रमाण है। प्रयागराज का 144 वर्ष बाद पड़ने वाला महाकुंभ का पर्व। 45 दिन तक अनवरत चलने वाले इस महाकुंभ को देखते ही बनता है। यह पर्व सभी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करता है। इस पर्व में किसी की जाति नहीं,भाषा नहीं,रंग नहीं,रूप नहीं,कोई अमीर गरीब नहीं सब सनातनी हैं।

को बुलाने के लिए सूचना करने,लाने तथा वापस भेजने में सरकार को कितना रुपया खर्च करना पड़ा। इसके लिए कितना बजट निर्धारित किया गया गया था। महामहिम ने उत्तर दिया केवल आधा पैसा। प्रतिनिधि मंडल आश्चर्यचकित रह गया। वह आधे पैसे के भाव और अर्थ को नहीं समझ सका। पूछा कि आधे पैसे में प्रचार प्रसार कैसे हो सकता है। एक विज्ञापन ही हजारों रुपए का होता है। इस पर डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने उत्तर दिया कि हमारे भारतीय दृष्टिकोण पर आधारित पंचांग का प्रकाशन होता है। उस पंचांग में जितने स्थान पर कुंभ के समय का विवरण और तिथि छपी होती है उसका अधिकतम मूल्य आधा पैसा ही होता है। इसे पढ़कर और जानकारी लेकर भक्त यहां पहुंच जाते हैं यह स्वचालित व्यवस्था है। इस पर भारत सरकार या राज्य सरकार कोई पैसा खर्च नहीं करती। यही है भारतीय संस्कृति। जो देश को एक सूत्र में जोड़े रखती है। उसका जीवंत प्रमाण है। प्रयागराज का 144 वर्ष बाद पड़ने वाला महाकुंभ का पर्व। 45 दिन तक अनवरत चलने वाले इस महाकुंभ को देखते ही बनता है। यह पर्व सभी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करता है। इस पर्व में किसी की जाति नहीं,भाषा नहीं,रंग नहीं,रूप नहीं,कोई अमीर गरीब नहीं सब सनातनी हैं। सभी भारतीय संस्कृति और सनातन के उपासक हैं। पवन गंगा मैया के भक्त हैं। यह पर्व वैश्विक स्तर पर शोध का विषय बना हुआ है।

विकास भी विरासत भी

भारतवर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित हो इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दृढ़ संकल्पित हैं। विकसित राष्ट्र के साथ –साथ राष्ट्र का प्राचीन गौरव,स्वाभिमान,हमारे आध्यात्मिक चेतना के केंद्र,तीर्थ स्थल ये सब भी सुरक्षित और संरक्षित रहें। इसका भी देशवासियों को सचेत और जागृत करने का कार्य किया जा रहा है। पराधीनता के कल खंड में आक्रांताओं ने हमारे धर्म स्थलों को जो खंडित किया,उनके पुनर्निर्माण और पुनः प्रतिष्ठित करने का तथा जनजागरण के अनेक स्वरूप में कार्य किए जा रहे हैं।इनमें अयोध्या,मथुरा और काशी समाहित हैं।

सनातन की एक बड़ी सफलता श्रीराम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा जिसको एक वर्ष 22 जनवरी को पूर्ण हुआ। इस सफलता से भारत ही नहीं विश्व के सनातन प्रेमियों में एक आशा,विश्वास का संचार हुआ है। काशी व मथुरा में भी ऐसे ही प्रयासों से हम सफल होंगे।

सनातन के इतिहास में कलियुग में जिस अवतार की चर्चा विविध रूपों में की गई है वह रुहेलखंड अंतर्गत मुरादाबाद के सम्भल नगर में होगा। पूरा सनातनी समाज पूर्ण रूप से आश्वस्त है कि जिस प्रकार माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्णय से अयोध्या में राम मंदिर के पक्ष में निर्णय आया है। उसी प्रकार का निर्णय तीनों इन तीनों स्थानों के लिए आने की संभावना है। उपर्युक्त सभी विषयों के आधार पर कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सनातन धर्म के मन में एक नवचेतना का संचार हुआ है।

त्रिवेणी संगम का महत्व

अंजु अग्निहोत्री

भारत में नदियों तथा महान नदियों के अनेक संगम स्थल हैं। उन सबका अपना–अपना धार्मिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक महत्व है। किन्तु प्रयाग के जिस संगम की चर्चा यहां की जा रही है, उसका परम्परा से अपना वैशिष्ट्य रहा है। प्रयाग में गंगा, यमुना, सरस्वती के संधि स्थल को ही संगम कहा गया। पुराणों का कथन है कि जो लोग श्वेत (सित) तथा कृष्ण (नील या असित) दो नदियों के मिलन स्थल (संगम) पर स्नान करते है। वे स्वर्ग जाते हैं। इस दृष्टि से प्रयाग के संगम स्थल पर विचार करना अपेक्षित है कि उसमें त्रिधाराओं का संगम है या द्विधाराओं का ही।

त्रिवेणी का साक्ष्य

श्रृति, स्मृति और पुराणों का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि जहॉ स्मृतियों तथा पुराणों में प्रयाग का महत्व विस्तार से वर्णित है, वहॉ श्रुतियों के केवल ऋग्वेद के दो स्थलों पर ही उसका उल्लेख हुआ है। तीर्थ–चिन्तामणि में उद्धत ऋग्वेद (खिल 10/24) के मंत्र में कहा

श्रृति, स्मृति और पुराणों का अनुशीलन *करने पर ज्ञात होता है कि जहॉ स्मृतियों तथा पुराणों में प्रयाग का महत्व विस्तार से वर्णित है, वहॉ श्रुतियों के केवल ऋग्वेद के दो स्थलों पर ही उसका उल्लेख हुआ है। तीर्थ–चिन्तामणि में उद्धत ऋग्वेद (खिल 10/24) के मंत्र में कहा गया है कि जिस स्थान पर श्वेतवर्णा (धवला) गंगा और असितवर्णा (नीलवर्णा) यमुना, ये दो नदियॉ मिलती हैं उस स्थल पर स्नान करने से स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है।*

कालिदास ने रघुवंश (13/58) में कहा है कि सितासित धाराओं से संयुक्त गंगा यमुना के संगम पर जो व्यक्ति स्नान कर पवित्र होते है वे तत्वज्ञानी न होने पर भी संसार के बन्धनों से मुक्त हो जाते है। इस सन्दर्भ में कालिदास ने भी सरस्वती की चर्चा नहीं की है। इस मंत्र से यह ज्ञात होता है कि प्रयाग का गंगा यमुना के संगम के रूप में महत्व मानगया है। इस मान्तव्य के विपरीत त्रिवेणी शब्द से गंगा यमुना सरस्वती का संगम ग्रहण किया जाता है और इस तीनो महानदियों कस संगम स्थल प्रयाग में बताया जाता है। इस दृष्टि से श्रुति स्मृति तथा पुराणों का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि प्रयाग में त्रिवेणी के सम्बन्ध में मत मतान्तर है।

गया है कि जिस स्थान पर श्वेतवर्णा (धवला) गंगा और असितवर्णा (नीलवर्णा) यमुना, ये दो नदियॉ मिलती हैं उस स्थल पर स्नान करने से स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। जो जन उस स्थान पर शरीर विसर्जन करते हैं वे भी अमर हो जाते है।

ऋग्वेद मंत्र से प्रभावित होकर महाकवि कालिदास ने रघुवंश (13/58) में कहा है कि सितासित धाराओं से संयुक्त गंगा यमुना के संगम पर जो व्यक्ति स्नान कर पवित्र होते है वे तत्वज्ञानी न होने पर भी संसार के बन्धनों से मुक्त हो जाते है। इस सन्दर्भ में कालिदास ने भी सरस्वती की चर्चा नहीं की है।

इस मंत्र से यह ज्ञात होता है कि प्रयाग का गंगा यमुना के संगम के रूप में महत्व माना गया है। इस मान्तव्य के विपरीत त्रिवेणी शब्द से गंगा यमुना सरस्वती का संगम ग्रहण किया जाता है और इस तीनो महानदियों कस संगम स्थल प्रयाग में बताया जाता है। इस दृष्टि से श्रुति स्मृति तथा पुराणों का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि प्रयाग में त्रिवेणी के सम्बन्ध में मत मतान्तर है। इस सम्बन्ध में प्राचीनतम उद्धरण नागेश भट्ट के तीर्थेन्दु शेखर में उद्धत ऋग्वेद (खिल 9/113/12) का मंत्र है। जिसमें गंगा यमुना तथा सरस्वती के संगम का उल्लेख किया गया है।

'यत्र गंगा च यमुना च यत्र प्राची सरस्वती' ऋग्वेद के इस मंत्र के अतिरिक्त कतिपय पुराण वचनों तथा निबन्धकारों के निर्देशों से भी इसकी पुष्टि होती है। भीमासेक नारायण भट्ट ने त्रिस्थलीसेतु में प्रयाग को तीन नदियों का संगम बताते हुए लिखा है कि 'अकारस्वरूप सरस्वती' 'उकार स्वरूप यमुना' और 'मकर स्वरूप गंगा' से सम्बन्धित प्रणव (ओंकार) ही प्रयाग है। उनके इस मन्तव्य का आधार पुराण संभवतः ब्रहम्पुराण का यह वचन रहा है–

''एवं त्रिवेणी विख्याता बेदवीर्ज प्रकीर्तिता''।

उक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त तीर्थ चिन्तामणि में भी तीनों नदियां के संगम का इस प्रकार उल्लेख हुआ है–

''सितासिता तु या धारा सरस्वत्या विदर्मिता''।

सरस्वती के उद्गम और अन्तर्धान सम्बन्धी मत मतान्तर उक्त कतिपय स्फुट एवं प्रमाण निरपेक्ष्य वचनों के अतिरिक्त रामायण और अन्यान्य पुराणों तथा निबन्धकारों ने प्रयाग में केवल गंगा और यमुना के ही संगम का उल्लेख किया है। सरस्वती का उनमें समावेश नहीं है। सरस्वती के उद्गम तथा विलुप्त होने सम्बन्धी विभिन्न ग्रन्थों में जो उल्लेख मिलते हैं उनके आधार पर

प्रयाग में सरसवती का अस्तिव सिद्ध नहीं होता है। सरस्वती के सम्बन्ध में अब तक जो विचार प्रकाश में आये हैं उनका निष्कर्ष इस प्रकार है।

ऋग्वेद में लगभग चालीस बार इस पुण्यतोया नदी का नाम उल्लिखित है। इन सभी मंत्रों में उनकी दिव्य महिमा का वर्णन है। इसके साथ अनेक एतिहासिक धार्मिक तथा आध्यत्मिक घटनाएं सम्बद्ध है।

उसके उद्गम स्थल के सम्बन्ध में अनेक मत है। कुछ विद्वानों का उद्गम मीरपुर पर्वत और बीकानेर में विलुप्त होना बताते हैं पटियाला की वर्तमान सुस्सुति ही अदृश्य होकर प्रयाग में गंगा यमुना से मिल गई, ऐसा भी कुछ लोगों का कहना है। जैमिनीय ब्राहम्ण (2/26/12) में सरस्वती के प्लक्ष प्रस्रवण नामक स्थान में प्रकट होने का उल्लेख है। ताण्ड्यब्राहम्ण (3/1–4) में सरस्वती को प्लक्ष से निकली हुए और सहस्रों पहाडियों को विदीर्ण करती हुई द्वैतवन में प्रवेश करते हुए दिखाया गया है। विनशन से लेकर प्लक्ष प्रस्रवण तक की पारस्परिक दूरी अश्वगति से चालीस दिनों की बतायी गयी है।

महाभारत (शल्य पर्व 51/19) के अनुसार सरस्वती का उद्गम ब्रहांसर और वामनपुराण (2/42–43) के अनुसार बदरिकाश्रम से हुआ है। ब्रहम्पुराण (3/8) के अनुसार ब्रहम्हत्या के पाप से युक्त होने के कारण शंकर इसमें कूद पडे थे जिससे यह अन्तर्हित हो गई। महाभारत (अनु0 155/25–27) में लिखा है कि सरस्वती उतथ्य के शाप से मरु देश में चली गयी और सूखकर अपवित्र हो गयी। अन्तर्धान होने के उपरान्त वह चमसोद्मेद शिवोद्मेद एवं नागोद्मेद पर दिखायी पडी।

कुछ विद्धानों के मत से सरस्वती को स्वतंत्र नदी न होकर अपर नाम सिन्धु ही है। उक्त प्रमाणों से विदित होता है कि सरस्वती एक विशाल जलपूर्ण नदी थी। वह यमुना और शुतुद्रि के मध्य बहती थी (ऋग्वेद 10/75/5)। ऋग्वेद (6/61/12) में उसका स्वतंत्र नदी के रूप में उल्लेख है और निरूधत (2/23) में भी उसे नदी ही कहा गया है (तत्र सरस्वती इत्येतस्य नदवित्) । वात्सनेय संहिता (34/11) में ऐसा उल्लेख हुआ है कि पॉच नदियॉ अपनी

सहायक नदियों के साथ सरस्वती में मिलती हैं ''पंच नमः सरस्वतीमपि यान्ति'' करते हुए पश्चिम में विनशन तक उसकी सीमा र्निधारित की गई है। भाष्यकार मेधातिथि का कथन है कि विनशन सरस्वती का अर्न्तधान स्थल है। प्रयाग में गंगा यमुना का संगम है (विनशनं सरस्वत्या अन्तर्धानदेशः। प्रयागों गंगायमुनयोः संगमः)। इस प्रकार कुल्लुक भट्ट ने भी विनशन में ही सरस्वती का अन्तर्धान बताया है। बेदो ब्राहम्ण ग्रन्थों और पुराणों आदि में सरस्वती के सम्बन्धा में भी वर्णन मिलते हैं उन सब का तारतम्य बदरी क्षेत्र से निकलने वाली सरस्वती नदी से बैठता है। केशव प्रयाग में वह अलकनन्दा (गंगा) से सन्धि करती है।

इन विभिन्न मन्तव्यों का अनुशीनल करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि मनुस्मृति के रचनाकाल तक सरस्वती का अन्तर्धान प्रदेश प्रयाग न होकर विनशन (बीकानेर) था। सरस्वती को गंगा यमुना के संगम से सम्बद्ध करने का प्रचलन बहुत बाद का संभवतः ब्रहम्पुराण के साथ से हुआ ।

अध्यात्म,राष्ट्रीय एकता और मानवता का महासंगम

महाकुंभ

मृत्युंजय दीक्षित

सनातन हिंदू संस्कृति का महापर्व है महाकुंभ, विश्व का सबसे बड़ा आध्यात्मिक, धार्मिक और सांस्कृतिक उत्सव। सनातन संस्कृति की आस्था का सबसे बड़ा और सर्वोत्तम पर्व महाकुंभ न केवल भारत अपितु संपूर्ण विश्व में सुविख्यात है। यह एकमात्र ऐसा महापर्व है जिसमें सम्पूर्ण विश्व से श्रद्धालु भक्त कुम्भस्थल पर आकर भारत की समन्वित संस्कृति, विश्वबंधुत्व की सद्भावना और जनसामान्य की अपार आस्था का अनुभव करते हैं। वैभव और वैराग्य के मध्य आस्था के इस महाकुम्भ में सनातन समाज नदी के पावन प्रवाह में अपने समस्त विभेदों, विवादों और मतांतरो को विसर्जित कर देता है। इस मेले में मोक्ष व मुक्ति की कामना के साथ ही तन,मन तथा बुद्धि के सभी दोषों की निवृत्ति के लिए करोड़ों श्रद्धालु अमृत धारा में डुबकी लगाते हैं। महाकुंभ में योग, ध्यान और मंत्रोच्चार से वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर जाता है। महाकुंभ में समस्त अखाड़े प्रतिभाग करते हैं उनमें से प्रत्येक की महिमा, इतिहास व परम्पराएं अदभुत हैं।

महाकुंभ का इतिहास प्राचीन पौराणिक कथाओं में रचा बसा है। इसकी कथा समुद्र मंथन और देव–दानव संघर्ष से जुड़ी है जिसमें अमृत कलश की प्राप्ति हुई थी। समुद मंथन की कथा के अनुसार राजा बलि के राज्य में शुक्राचार्य के आशीर्वाद एवं सहयोग से असुरों की शक्ति बहुत बढ़ गई थी और देवतागण

उनसे भयभीत रहने लगे थे। भगवान विष्णु के सुझाव पर देवताओं ने असुरों से मित्रता कर ली और समुद्र मंथन किया। क्षीर सागर के मन्थन के लिये मन्दराचल पर्वत की मथानी और वासुकी नाग को रस्सी बनाया गया। समुद्र मंथन से सर्वप्रथम हलाहल विष निकला जिसका पान करके शिव जी ने समस्त सृष्टि की रक्षा की और नीलकंठ कहलाए । तत्पश्चात क्रमशः चन्द्र, कामधेनु गौ,कल्पवृक्ष,पारिजात, आम्रवृक्ष तथा सन्तान ये चार दिव्य वृक्ष, कौस्तुभ मणि, उच्चौश्रवा, अश्व और ऐरावत हाथी निकले। इसके पश्चात माता लक्ष्मी का प्राकट्य हुआ जिन्होंने भगवान विष्णु का वरण किया। वारुणी और शंख निकले। अन्त में धन्वन्तरि वैद्य अमृत घट लेकर निकले। दैत्यों ने उस अमृत घट को छीन लिया और पीने के लिये आपस में ही लड़ने लगे,तब भगवान विष्णु ने मोहिनी का रूप धारणकर दैत्यों को रूप सौन्दर्य से आसक्त कर लिया। दैत्यों ने अमृतघट विष्णु रूपी मोहिनी को बांटने के लिये दे दिया। मोहिनी रूपी विष्णु ने देवताओं को अमृत बांटना प्रारम्भ किया, एक असुर को मोहिनी की यह चालाकी समझ आ गयी और उसने देवताओं की पंक्ति में बैठकर अमृत प्राप्त कर लिया। जब देवताओं का ध्यान उसकी ओर गया तो उन्होंने भगवान विष्णु को बताया। भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से उस दैत्य की गर्दन धड़ से अलग कर दी, दैत्य के शरीर के यही दो भाग राहु और केतु हैं। देवों को अमृत पान कराकर भगवान विष्णु अन्तर्धान हो गये। इसके पश्चात देवासुर संग्राम छिड़ गया। देवराज इन्द्र की आज्ञा से उनके पुत्र जयंत अमृत कलश लेकर पलायन कर गए, दैत्य उनका पीछा कर रहे थे इस भागने के क्रम में जिन स्थानों पर अमृत छलककर गिरा उन्हीं स्थानों पर कुम्भ का आयोजन होता है। वे स्थन हैं हरिद्वार, उज्जैन,नासिक और प्रयागराज। अमृतकलश लेकर भागने के दौरान सूर्य,चन्द्र,वृहस्पति तथा शनि ने असुरों से जयन्त की रक्षा की थी, यही कारण है कि इन चारों ग्रहों की विशेष स्थिति होने पर ही कुम्भ का आयोजन होता है। देवासुर संग्राम 12 वर्ष चला था जब देवता बालि पर विजय प्राप्त कर सके थे,अतः प्रत्येक बारह वर्ष में कुम्भ का मेला लगता है।

महाकुम्भ की महिमा का वर्णन स्कंद पुराण में स्पष्ट किया गया है। विष्णु पुराण में भी कुम्भ स्नान की प्रशंसा की गई है। कुंभ की अनेक व्याख्याएं की गई हैं। वेदों में भी कुम्भ की महिमा बताई गई है और ज्योतिष तथा योग में भी कुम्भ है। ऋग्वेद में कुम्भ शब्द पांच से अधिक बार, अथर्ववेद में दस बार और यजुर्वेद में अनेक बार आया है। ब्रह्माण्ड की रचना को भी कुम्भ के सदृश ही माना गया है। पृथ्वी भी ऐसी ही आकृति ग्रहण करती है। पृथ्वी का परिक्रमण पथ भी कुम्भाकार ही है। कुम्भ का उपयोग घी, अमृत और सोमरस रखने के लिए भी किया जाता था। कुम्भ में ही औषधि संग्रह और निर्माण भी किया जाता था। वेदों में कलश को समुद्रस्थ कहा गया है वहीं अथर्ववेद में पितरों के लिए कुम्भदान का उल्लेख है।

'कुम्भ' का शाब्दिक अर्थ है 'घट, कलश, जलपात्र या करवा। भारतीय संस्कृति में 'कुम्भ' मंगल का प्रतीक है। यह शोभा ,सौन्दर्य एवं पूर्णत्व का वाचक भी है। सनातन संस्कृति में समस्त ध ार्मिक एवं मांगलिक कार्य स्वास्तिक चिन्ह से अंकित अक्षत, दुर्वा, आम्र पल्लव से युक्त जलपूर्ण कुम्भ के पूजन से प्रारम्भ होते हैं। कुम्भ आदिकाल से हमारी आध्यात्मिक चेतना के रूप में प्रतिष्ठित है।भारतीय संस्कृति में जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी संस्कारों में कुम्भ का सर्वाधिक महत्व है।मनुष्य जीवन की अन्तिम यात्रा में भी अस्थि कलश अर्थात् कुम्भ और गंगा का ही योग है। ग्रह–नक्षत्रों की स्थिति तथा अन्य परम्पराओं के अनुसार कुम्भ के तीन प्रकार होते हैं, अर्ध कुम्भ, कुम्भ तथा महाकुम्भ, इस वर्ष प्रयागराज में हो रहा कुम्भ महाकुम्भ है, जिसमें 12–12 वर्षों की 12 आवृत्तियां पूर्ण हो रही हैं। यह अवसर प्रत्येक 144 वर्ष के उपरांत आता है इसीलिए इसे महाकुम्भ कहा जाता है।

महाकुम्भ और प्रयागराज ये दुर्लभ संयोग है क्योंकि कुम्भ महाकुम्भ है और प्रयागराज तीर्थराज हैं। प्राचीन काल में प्रयागराज को बहुयज्ञ स्थल के नाम से जाना जाता था। ऐसा इसलिये क्योंकि सृष्टि कार्य पूर्ण होने पर सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने प्रथम यज्ञ यहीं किया था तथा उसके बाद यहां पर अनेक पौराणिक यज्ञ हुए। प्रयागराज में गंगा, यमुना और सरस्वती का त्रिवेणी संगम है। महाकुम्भ के अवसर पर यहां पर स्नान करना सहस्रों अश्वमेध यज्ञों, सैकड़ों वाजपेय यज्ञों तथा एक लाख बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने से भी अधिक पुण्य प्रदान करता है। प्रयागराज महाकुंभ –2025 में सम्पूर्ण भारत वर्षमें सनातन धर्म के समस्त मत मतान्तर, समस्त अखाड़े दृआश्रम तथा समस्त महान संतों का आगमन हो रहा है, ऐसे ऐसे संत पध ाार रहे हैं जो सामान्य रूप से दर्शन नहीं देते इसके अतिरिक्त बड़ी संख्या में सनातन धर्म को मानने वाले विदेशी संतों–महंतों तथा उनके शिष्यों का आगमन भी हो रहा है। यह दृश्य अत्यंत अद्भुत होता है जब आम भारतीय जनमानस को उनके भी दर्शन प्राप्त होते हैं। प्रयागराज महाकुम्भ–2025 में अनुमानतः 40 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं का आगमन संभावित है। मेले की तैयारियां स्वयं प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में की गई हैं। मेले के पौराणिक और सांस्कृतिक महत्व के अनुरूप ही श्रद्धालुओं का अनुभव रहे इस दृष्टि से महाकुम्भ आयोजन की तैयारियां दो वर्ष पूर्व से आरम्भ कर दी गई थीं। लगभग पचास करोड़ लोगों के आतिथ्य को संभाल सकने योग्य अवस्थापना का निर्माण किया गया है। उड्डयन, रेल, सड़क परिवहन ने मिलकर यात्रा सुगम बनाने के लिए अपनी सेवाओं को विस्तार दिया है। प्रयागराज नगर को पौराणिक नगरी की तरह सजाया गया है। महाकुम्भ में इस बार केवल सनानत संस्कृति के अलौकिक आध्यात्मिक पहलुओं का दर्शन ही नहीं होगा अपितु विकसित होते भारत का

प्रयागराज महाकुंभ –2025 में सम्पूर्ण भारत वर्ष में सनातन धर्म के समस्त मत तान्तर, समस्त अखाड़े दृआश्रम तथा समस्त महान संतों का आगमन हो रहा है, ऐसे ऐसे संत पधार रहे हैं जो सामान्य रूप से दर्शन नहीं देते इसक भी हो रहा है।

दर्शन भी होगा। महाकुम्भ मेले के प्रबंधन में प्रत्येक स्थान आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है। अन्य प्रान्तों से आ रहे श्रद्धालुओं को कोई कठिनाई न हो इसके लिए सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है। डेढ़ लाख टेंटों वाली टेंट सिटी बनाई गयी है। स्वच्छता के विशेष प्रबंध किये जा रहे हैं। मेला परिसर में एक 100 शैय्या वाला चिकित्सालय भी स्थापित किया गया है।

महाकुम्भ–2025 में गुलामी की मानसिकता के प्रतीक शब्दों और चिह्नों को हटाने का महाअभियान प्रारम्भ हो रहा है जिसके अंतर्गत सर्वप्रथम शाही स्नान का नाम बदलकर अमृत स्नान कर दिया गया है। अखाड़ों के मेला प्रवेश को अब पेशवाई के स्थान पर अखाड़ा छावनी प्रवेश कहा जाएगा। एक घाट का नाम बदलकर महान क्रांतिकारी शहीद चंद्रशेखर आजाद घाट किया गया है। महाकुम्भ–2025 में डिजिटल क्रांति भी देखने को मिलेगी। महाकुम्भ –2025 पर्यावरण संरक्षण व समाजिक समरसता के व्यापक अभियान के लिए भी स्मरणीय बनाया जायेगा। महाकुम्भ में ज्योतिष कुम्भ से लेकर स्वास्थ्य के विभिन्न क्षेत्रों के महाकुम्भ का भी आयोजन होने जा रहा है। मेले की समाप्ति तक निर्धारित मेला क्षेत्र उत्तर प्रदेश के 76 वें जनपद के रूप में मान्य होगा, यह घोषणा मेले के विस्तार और महत्त्व का प्रमाण है।

एक हजार साल की उपेक्षा और आघात से उबरता
आदि तीर्थ संभल

- उत्तर प्रदेश की दूसरी काशी है सम्भल
- स्वतंत्रता के बाद भी उपेक्षित रहा सम्भल
- 68 तीर्थ,19 कूपों का नगर है सम्भल
- त्रिकोण में स्थापित हैं शिवलिंग

सर्वेश कुमार सिंह

सम्भल चर्चा के केन्द्र में है। उत्तर प्रदेश विधान सभा में 16 दिसम्बर को सम्भल पर हुई चर्चा में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के ओजस्वी और सीधे संदेश के साथ दिये गए वक्तव्य के बाद से देश में सम्भल की एक बार फिर चर्चा शुरु हुई है। हालांकि जामा मस्जिद के सर्वे के आदेश के बाद लोगों ने सम्भल के विवाद को जाना। किन्तु सम्भल का महत्व कितना अधिक है और यह भारत के किसी भी धर्म स्थल या तीर्थ से कम महत्व नहीं रखता। इसकी प्राचीनता और पौराणिक महत्व के अनेक प्रमाण उपलब्ध हैं। एक हजार साल पहले तक संभल भारतीय आध्यात्मिक,सांस्कृतिक और भक्ति के केन्द्र में था। लेकिन जब भारत पर आक्रमण शुरु हुए और विदेशी आक्रांताओं ने धार्मिक महत्व के प्रमुख स्थलों को ध्वस्त करके अपनी राजनैतिक और धार्णिक सत्ता को स्थापित करने का प्रयास किया, तब संभल भी अयोध्या,मथुरा और काशी की भांति ही प्रभावित हुआ। यहां भी मन्दिर तोडे गए और यह एहसास कराया गया कि तोडने वालों का धर्म ही श्रेष्ठ है।

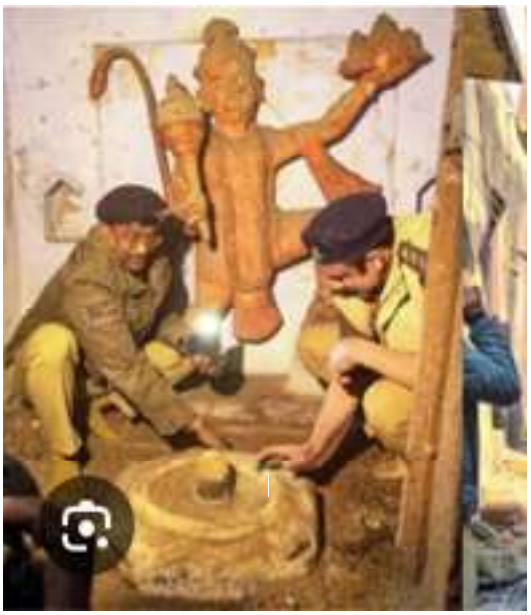

इस हजार साल की उपेक्षा और पराजय से उपजी नियति ने सम्भल को इतिहास में गुमनाम नगर के रूप में स्थापित कर दिया। यह छोटी ''काशी'' है। काशी में जो तीर्थ और धर्मस्थल हैं वे सभी सम्भल में भी हैं। जिस सम्भल नगर में जामा मस्जिद बनाम हरिहर मन्दिर का विवाद शुरु हुआ है, वह नगर सामान्य नहीं है। यह अनेक विशिष्टताओं को समेटे है। यह नगर पौराणिक, सांस्कृतिक धरोहरों का केन्द्र है। इसमें 68 तीर्थ और 19 कूप हैं। इस कारण इसे छोटी काशी भी कहा जाता है। इस नगर को सृष्टि के आरम्भ में स्वयं ब्रह्मा ने बसाया था। आज यह शिल्प की दृष्टि से सींग के सामान के लिए प्रसिद्ध है।

पुराना है मन्दिर–मस्जिद विवाद,चालीस साल पहले भी चर्चा में आया

सम्भल में मन्दिर और मस्जिद का विवाद कोई नया नहीं है। इस विवाद के कारण कई बार

पहले भी हिंसा हो चुकी है। हिंसा में अनेक जानें गई हैं। वर्ष 1990 के दशक में भी यह विवाद उभरा था किन्तु उस समय के प्रशासन ने तत्परता से इसे सुलझा दिया था। उस समय सूचना विभाग ने मुरादाबाद की विकास पुस्तिका प्रकाशित की थी। सम्भल तब मुरादाबाद की एक तहसील थी। तत्कालीन जिला सूचना अधिकारी आईडी जोशी ने उक्त पुस्तिका का प्रकाशन किया था। पुस्तिका में उन्होंने उल्लेख किया था कि सम्भल में हरिहर मन्दिर पर अतिक्रमण के बाद मस्जिद बनाई गई है। इसके प्रकाशन के बाद एक स्थानीय उर्दू दैनिक ने इस पर सम्पादकीय प्रकाशित किया। इसके प्रकाशन के बाद विवाद बढ गया था और सम्भल के तत्कालीन प्रमुख नेता डा शफीकुर्रहमान वर्क ने, जो विधायक और सांसद भी रहे इस पुस्तिका के प्रकाशन पर आपत्ति की और थाने में जिला सूचना अधिकारी के खिलाफ तहरीर दे दी थी। किन्तु जिलाधिकारी ने तत्परता से उक्त पुस्तिका का वितरण रुकवा कर मामने को रफा दफा करा दिया था। जो पुस्तिकाएं बांटी गई थीं उन्हें वापस मंगा लिया गया था। लेकिन, जिला सूचना अधिकारी का कहना था कि उन्होंने उक्त संदर्भ मुरादाबाद के गजेटियर से लिया है। इसमें लिखा है कि यहां हरि मन्दिर था जिसके स्थान पर मस्जिद बनी है।

सम्भल चर्चा के मुख्य केन्द्र में 19 नवम्बर 2024 को आया, जब इलाहाबाद उच्च न्यायालय की पश्चिम उत्तर प्रदेश के लखनऊ खण्डपीठ के वरिष्ठ अधिवक्ता हरिशंकर जैन के पुत्र सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता विष्णुशंकर जैन ने के प्रयास से संभल जिला अन्तर्गत चन्दौसी के न्यायालय में एक याचिका दायर करके जामा मस्जिद का सर्वे कराने की मांग की गई। याचिका में कहा गया कि इस स्थान पर पूर्व में हरिहर मन्दिर था। कोर्ट ने उसी दिन सर्वे का आदेश जारी कर दिया और सर्वे के लिए अधिवक्ता रमेश राघव को सर्वे कमिश्नर नियुक्त कर दिया। सर्वे भी उसी दिन आरंभ हुआ। लेकिन सम्भल में विवाद 24 नवम्बर को हुआ जब यहां पुनः सर्वे आरम्भ हुआ तो विवाद हो गया और हिंसा भड़क उठी।

वर्ष 1999 में भाजपा की कल्याण सिंह के नेतृत्व की सरकार में एक बार इसके विकास पर चर्चा अवश्य आरंभ हुई थी तब पर्यटन विभाग को योजना बनाने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी किन्तु वह योजना आगे नहीं बढी। सम्भल के विकास के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन क्षेत्र प्रचारक स्व. ओमप्रकाश जी ने सूचना विभाग ने मुरादाबाद की विकास पुस्तिका प्रकाशित की थी। सम्भल तब मुरादाबाद की एक तहसील थी। तत्कालीन जिला सूचना अधिकारी आईडी जोशी ने उक्त पुस्तिका का प्रकाशन किया था। पुस्तिका में उन्होंने उल्लेख किया था कि सम्भल में हरिहर मन्दिर पर अतिक्रमण के बाद मस्जिद बनाई गई है।

नहीं बन सका तीर्थ क्षेत्र

राजनीतिक रूप से यहां पहले कांग्रेस और बाद में जनता दल और समाजवादी पार्टी के नेताओं का प्रभुत्व रहा है। खासकर मुलायम सिंह यादव और उनके परिवार ने यहां से लोकसभा में प्रतिनिधित्व किया। यहां से मुलायम सिंह यादव और प्रो. रामगोपाल यादव दोनों सांसद रहे हैं। इनके पहले जनता दल के टिकट पर श्रीपाल सिंह यादव, डीपी यादव और कांग्रेस

के समय श्रीमती शांति देवी यादव ने संसद में प्रतिनिधित्व किया। एक बार भारतीय जनता पार्टी के सत्यपाल सिंह 2014 में चुनाव जीते। किन्तु किसी भी सरकार ने इसकी सांस्कृतिक और पौराणिक विरासत को ध्यान में रखकर इसके विकास और संरक्षण पर ध्यान नहीं दिया। यहां तक कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार आने पर भी इसकी सुधि नहीं ली गई। प्रदेश के अनेक धार्मिक महत्व के स्थानों को तीर्थ क्षेत्र घोषित कर दिया गया है किन्तु सम्भल को उस श्रेणी में नहीं रखा गया। हालांकि वर्ष 1999 में भाजपा की कल्याण सिंह के नेतृत्व की सरकार में एक बार इसके विकास पर चर्चा अवश्य आरंभ हुई थी तब पर्यटन विभाग को योजना बनाने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी किन्तु वह योजना आगे नहीं बढी। सम्भल के विकास के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन क्षेत्र प्रचारक स्व. ओमप्रकाश जी ने रुचि ली थी। लेकिन बाद में योजना पर आगे अमल नहीं हुआ।

कल्कि अवतार की भविष्यवाणी

पश्चिम उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद मण्डल अन्तर्गत सम्भल एक गुमनाम पौराणिक तीर्थ है। राज्य में स्थित प्रमुख धर्म स्थलों और तीर्थों की जब बात होती है तो अयोध्या, मथुरा, काशी और नैमिषारण्य का नाम सर्वोपरि होता है। किन्तु कम ही लोग जानते हैं कि मुरादाबाद से दक्षिण में 40 किमी की दूरी पर स्थित सम्भल नगर का पौराणिक और ऐतिहासिक महत्व है। इसका उल्लेख कई पुराणों और इहितास की पुस्तकों में है। सम्भल पर लिखी गई पुस्तक 'सम्भल महात्म' के अनुसार यहां वह सभी तीर्थ मौजूद हैं जो काशी में हैं। पौराणिक मान्यता है कि कलयुग में भगवान विष्णु का कल्कि अवतार होगा और यह सम्भल में ही ब्राह्मण परिवार में होगा। इस अवतार के साथ ही सतयुग का आरम्भ हो जाएगा। यह अत्यन्त चिंता की बात है कि अति महत्व के स्थल सम्भल की उपेक्षा हुई है। इस कारण देश का जनमानस इस नगर की धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्ता से वंचित है। सम्भल महात्म पुस्तक में इस नगर की प्राचीनता और पौराणिक महत्व को विस्तार से बताया गया है। सम्भल महात्म का प्रकाशन देववाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ने किया है। सम्भल महात्म का सम्पादन डा. रमाकान्त शुक्ल ने तथा भूमिका स्वामी

सम्भल महात्म पुस्तक के अनुसार 81000 श्लोकों वाले स्कन्द पुराण के भूखण्ड में सम्भल के महात्म का उल्लेख है। सत्ताईस अध्याय वाले इस महात्म में सम्भल के 68 तीर्थों और 19 कूपों का उल्लेख है। स्कन्द पुराण के भूमि खण्ड में जिसे भूमिवाराह खण्ड भी कहा गया है, कल्कि भगवान विष्णु के अवतार की भविष्यवाणी की गई है।

सुखबोधाश्रम ने लिखी है। संस्कृत से अनुवाद श्री वाणीशरण शर्मा ने किया।

सम्भल महात्म पुस्तक के अनुसार 81000 श्लोकों वाले स्कन्द पुराण के भूखण्ड में सम्भल के महात्म का उल्लेख है। सत्ताईस अध्याय वाले इस महात्म में सम्भल के 68 तीर्थों और 19 कूपों का उल्लेख है। स्कन्द पुराण के भूमि खण्ड में जिसे भूमिवाराह खण्ड भी कहा गया है, कल्कि भगवान विष्णु के अवतार की भविष्यवाणी की गई है। गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित कल्याण के संक्षिप्त स्कन्द पुराण में भी कलियुग के अन्तिम चतुर्थ खण्ड में सम्भल में भगवान विष्णु के अवतार का निर्देश है। इसी प्रकार श्रीमद्भागवत महापुराण के अनुसार–

चराचरगुरोर्विशणोरीश्वरस्याखिलात्मनः।
धर्मत्राणाय साधूनां जन्मकर्मापनुत्तये।।
शम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः।
भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति।।

चर अचर जगत के गुरु सर्वान्तरा्मा परमात्मा धर्म और धर्मात्माओं की रक्षा के लिए अवतार ग्रहण करते हैं। सम्भल में विष्णुयशा ब्राह्मण के घर श्री कल्कि विष्णु भगवान का अवतार होगा।

सम्भल की प्राचीनता

सृष्टि के आरम्भ में ही 68 तीर्थों और 19 कूपों सहित सम्भल का निर्माण स्वयं भगवान विश्वकर्मा ने किया था। वेदों में इन्हें त्वष्टा कहा गया है। पाणिनीय व्याकरण के अनुसार तक्ष और त्वक्षु ये दो धातु शिल्प क्रिया के अर्थ में प्रयुक्त होती हैं। विष्णु भगवान के कल्कि अवतार की भूमि होने के कारण सृष्टि के आरम्भ में ही विश्वकर्मा ने सम्भल को बसाकर इसमें तीर्थों और कूपों का निर्माण किया था। सतयुग में सम्भल का नाम सत्यव्रत था। त्रेता में महद्गिरि. द्वापर में पिंगल, कलियुग में सम्भल नाम से इसकी प्रसिद्धि हुई। चारों युगों में सम्भल के पूर्वोक्त नामों का उल्लेख डा ब्रजेन्द्र मोहन सांख्यधर की पुस्तक Sambhal A historical survey युगानुसार सम्भल के इन नामों का उल्लेख डा संख्यधर ने 1981 में प्रकाशित " F-Alexandar: final report on the settlement of the Moradabad district " पुस्तक में किया है।

देश की राजधानी रहा है सम्भल

सम्भल को पृथ्वीराज चौहान ने राजधानी बनाया था। पृथ्वीराज चौहान के पराभव के बाद सम्भल में अनेक मुस्लिम शासकों का राज रहा। अकबर ने भी इसे कुछ समय के लिए अपनी राजधानी बनाया था। सम्भल मुगल काल में व्यापक क्षेत्रफल वाला राज्य रहा है। इसमें 47 परगने थे। जिसमें वर्तमान मुरादाबाद, बिजनौर, रामपुर, बदायुं और बरेली का क्षेत्र शामिल था। .सन 1620 में सम्भल से मुगल साम्राज्य को कुल 35 लाख 41 हजार 8 सौ 43 रुपये राजस्व दिया जाता था। जोकि दिल्ली और सरहन्दि को छोड़कर पूरे साम्राज्य में सबसे अधिक था। 1594 ई में सम्भल का क्षेत्रफल 40 लाख 47 हजार 193 बीघा था। यह क्षेत्रफल दिल्ली राज्य से भी एक लाख बीघा अधिक था। 1801 में सम्भल ईस्ट इण्डिया के अधीन आ गया था।

उत्तर प्रदेश समाचार सेवा
तथ्यों की पत्रकारिता के दो दशक

सर्वेश कुमार सिंह

(हरिद्वार में 29 सितम्बर 2024 को प्रेस क्लब में आयोजित हरिद्वार रत्न सम्मान समारोह में दिये गए भाषण पर आधारित)

समाचार सेवा की स्थापना लखनऊ में उत्तर प्रदेश की राजधानी में की गई थी, 15 फरवरी 2003 को। गत 2023 को इसकी स्थापना को 20 वर्ष पूरे हुए। वर्ष 2006 में इसे उत्तर प्रदेश सरकार से मान्यता मिली और पूरे राज्य में हमारा नेटवर्क है जिलों मे सांवददाता हैं। राज्य मुख्यालय पर मान्यता प्राप्त संवाददाता हैं।

अक्षरा पत्रिका हम लोगोंने प्रकाशित की। पत्रिका का प्रकाशन का उद्देश्य यह है समाचार सेवा की स्थापना लखनऊ में उत्तर प्रदेश की राजधानी में की गई थी, 15 फरवरी 2003 को। गत 2023 को इसकी स्थापना को 20 वर्ष पूरे हुए। वर्ष 2006 में इसे उत्तर प्रदेश सरकार से मान्यता मिली और पूरे राज्य में हमारा नेटवर्क है जिलों मे सांवददाता हैं। राज्य मुख्यालय पर मान्यता प्राप्त संवाददाता हैं। एक हमारे संवाददाता उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सदस्य भी बने हैं। सभी स्थानों पर हमारा प्रमुखता से नेटवर्क है। बीस वर्ष में हमने जो यह एक अविश्मरणीय क्षण है कि कम संसाधन के साथ, किसी बड़े संस्थान के सहयोग या किसी बड़ी पूंजी के बिना शुरु की गई ''न्यूज एजेंसी'' जो पत्रकारों ने ही शुरु की। पत्रकार ही इसके स्वामी हैं। पत्रकारों का एक समूह है जो इसके प्रबंधन में जुड़ा हुआ है और वही लोग इसको देखते हैं। समाचार सेवा ने बीस वर्षों में कई प्रमुख और बड़े अखबारों को सेवा दी है। जो हमारे ग्राहक रहे हैं उनमें नवभारत, मध्य प्रदेश का स्वदेश और कई प्रमुख अखबार हमारे साथ जुड़े। समय बदला तो हमने इलेक्ट्रानिक मीड़िया, इंटरनेट से चलने वाले साइवर मीडिया में भी दखल दिया। उनको भी समाचार उपल्बध कराते हैं। यह स्मारिका है अक्षरा। इसमें बीस वर्ष की प्रमुख घटनाओं को समाहित करने का प्रयास किया गया है। जब से हमने 2003 से शुरु की एजेंसी, उसके बाद से 2023 तक जो भी देश में और देश के बाहर भी प्रमुख घटनाक्रम हुए हैं उन पर हमने प्रमुख लेखकों, वरिष्ठ पत्रकारों से आलेख आमंत्रित किये हैं। इसमें प्रमुख रूप से श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन, इसके तीन पड़ाव थे, जिसमें इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बैंच का दिया गया फैसला, 30 सितम्बर 2010 तथा फिर सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिया गया 9 नवम्बर 2019 का फैसला उस पर आलेख हैं। राम जन्मभूमि के शिलान्यास पर आलेख है। उसके अलावा और प्रमुख घटनाक्रम। इस पत्रिका में प्रमुख लेखों को संग्रहित करते हुए इस बात का खास ध्यान रखा गया कि हम किसी खास

विचार से प्रभावित न हों। इसीलिए हमने जहां राजग की सरकार के कई महत्वपूर्ण फैसलों को शामिल किया है। वहीं यूपीए सरकार के समय के कई बड़े फैसले जैसे आरटीआई कानून, मनरेगा पर भी आलेख दिये हैं। इसे पूरी तरह से निष्पक्ष रखने का प्रयास किया है। कोशिश यह भी की गई कि जो भी लेख हों वे शोधपरक हों। उसमें कोई त्रुटि न हो संख्यात्मक त्रुटि न हो, तथ्यात्मक त्रुटि न हो। इस बात का हमने विशेष ध्यान रखा। उत्तर प्रदेश समाचार सेवा ने इसके पहले भी विशेष अवसरों पर विशेषांक प्रकाशित करने की लम्बी परंपरा निभायी है। हम विषय आधारित, राष्ट्रीय मुद्दों पर भी, राष्ट्रीय व्यक्तित्वों पर भी विशेषांक करते रहे हैं। इसी क्रम में हमने 2004 में आधाय्म विशेषांक प्रकाशित किया। हिन्दी पर हमने दो विशेषांक प्रकाशित किये हिन्दी विशेषांक एक और हिन्दी विशेषांक दो। पत्रकारिता पर भी दो विशेषांक प्रकाशित किये। समृद्ध भारत विशेशांक प्रकाशित किया, संस्कृति विशेषांक प्रकाशित किया। और जब गांधी जी की 150वीं जयंती आयी तो विशेष रूप से एक गांधी अंक भी हमने प्रकाशित किया। इसमें गांधी दर्शन पर लेख प्रकाशित किये। इसके लिए गांधी दर्शन के जानकार और अध्येयताओं से लेख आमंत्रित किये। इस तरह जहां हम समाचार सेवा को समाचार प्रेषण के माध्यम के रूप में चला रहे हैं वहीं प्रमुख विषयों, व्यक्तित्वों और अवसरो पर विशेषांक प्रकाशित करके हम कोशिश करते हैं कि ऐतिहासिक अवसरों पर ऐजेंसी कुछ कर पाये। आज एजेंसी का भी स्वरुप बदला है हमने जब यह एजेंसी शुरु की थी तो केवल प्रिंट मीडिया था। प्रिंट मीडिया को ही समाचार जाते थे। हालाकिं सन 2000 मे इटंरनेट का प्रादुर्भाव हो चुका था। हमारी पहली एजेंसी थी जिसने इंटरनेट के माध्यम से इंटरनेट का उपयोग करके एजेंसी को हमने शुरु किया। इसके पहले एजेसियों के जो माध्यम थे वे टेलीप्रिंटर थे। टेलीप्रिंटर के माध्यम से ही न्यूज जाती थी। इसके पहले तो पैकेट से भी समाचार जाते थे, डाक से समाचार जाते थे। लेकिन हमने सीधे इंटरनेट का माध्यम अपना कर ई मेल का उपयोग किया। आज भी सफलता पूर्वक हम इसका उपयोग कर पा रहे हैं। जब हमने एजेंसी शुरु की तो इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा कि किसी खास विचार खास वर्ग या समुदाय का कोई ऐसा ठप्पा न लगे प्रभाव न लगे ताकि यह न लगे कि एजेंसी किसी खास विचारधारा को प्रमोट करती है या किसी खास विचार का विरोध करती है। हमारा जो ध्येय वाक्य है वह बहुत स्पष्ट और पहले ही दिन से जो स्थापित किया वही आज भी है। हमने ''त्वरित, तथ्यात्मक और निष्पक्ष समाचार'' को अपना ध्येय बनाया। तथ्यों में हमारा पूरा फोकस रहता है तथ्य जो भी उसमें कोई छेड़छाड़ नहीं, उसमें कोई भेदभाव नहीं जो तथ्य जैसे हैं वैसे प्रस्तुत करना। बाकी समीक्षा करना समाचार पत्रों का काम है वह सम्पादकीय में करेंगे। समाज समीक्षा करेगा, लेकिन हम अपनी तरफ से कोई विचार उसमें नहीं थोपते हैं। लेकिन इस बात पर जरूर ध्यान रखते हैं कि हमारी पत्रकारिता हमारी एजेंसी की पत्रकारिता किसी भी रूप में राष्ट्र के विरोध में न हो वह समाज को क्षति पहुंचाने वाली न हो, समाज में सद्भाव के लिए किसी प्रकार की

हमने ''त्वरित, तथ्यात्मक और निष्पक्ष समाचार'' को अपना ध्येय बनाया। तथ्यों में हमारा पूरा फोकस रहता है तथ्य जो भी उसमें कोई छेड़छाड़ नहीं, उसमें कोई भेदभाव नहीं जो तथ्य जैसे हैं वैसे प्रस्तुत करना। बाकी समीक्षा करना समाचार पत्रों का काम है वह सम्पादकीय में करेंगे।

कोई समस्या खड़ी करने वाली न हो। इस बात का हम विशेष रूप से ध्यान रखते हैं।

आज यह विमोचन समारोह है और सम्मान समारोह भी है। हम लोग जब इस तरह के आयोजन करते हैं तो कुछ वैचारिक विमर्श भी करते हैं तो आज का जो समय है और विषय भी है वह है कि ''भविष्य का भारत और मीडिया की भूमिका क्या हो''। ये विषय विमर्श में काफी समय से चल रहा है। हम भी इसमें थोड़ा योगदान करते हैं और हम अपनी ऐजेंसी पर इसे लागू करते हैं। मीडिया या कहें पत्रकारिता, मीडिया तो अब है। पहले तो पत्रकारिता ही थी, हमने आपने सबने जब पत्रकारिता की शुरुआत की थी। तो प्रिंट मीडिया ही था। प्रिंट मीडिया के माध्यम से ही हम पत्रकार बने थे। वो एक दौर था जब मीडिया ने पत्रकारिता ने कई बड़े आयाम स्थापित किये। स्वतंत्रता से पहले और स्वतंत्रता के आन्दोलन में भी और उसके बाद भी मीडिया की भूमिका लोकतंत्र को बचाने में बहुत अहम रही। समाचार पत्रो ने बहुत सारे संघर्ष किये हम पत्रकारों ने काला कानून भी देखा था। उसका बहुत पुरजोर तरीके से विरोध हुआ आपात काल भी देखा था। उसका भी विरोध हुआ यानि कि पत्रकारिता लगातार संघर्ष करते हुए अपने ध्येय पथ पर आगे बढती रही है। ये 2000 के बाद का जो समय आया है वह बहुत क्रांतिकारी समय आया है। पत्रकारिता आगे बढ़कर मीडिया में बदल गई। यानि की इलेट्रानिक मीडिया आया और इलेक्ट्रानिक मीडिया के आते ही कुछ समय बाद ही इंटरनेट के आते ही साइबर मीडिया का वर्चस्व बढ़ गया और साइबर मीडिया के साथ ही सोशल मीडिया आ गया। आज का जो समय है वह सोशल मीडिया का समय है। लेकिन प्रिंट मीडिया का विश्वसनीयता के मामले में कोई मुकाबला नहीं है। यानि कि अखबार में छपी हुई खबर को आज भी पत्थर की लकीर माना जाता है। इसे देश समाज और शासन तंत्र भी मानता है। प्रभाव के मामले में सोशल मीडिया के प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता। लेकिन सोशल मीडिया जब से आया है तो एक बहस भी चली है कि यह जो सोशल मीडिया है यह क्या वास्तव में मीडिया है। सोशल मीडिया के कारण जहां बहुत सारे काम भी हुए हैं बहुत सारे घटनाक्रम उजागर हुए हैं वही सोशल मीडिया के कारण पत्रकारों की और पत्रकारिता की छवि भी प्रभावित हुई है। उसकी वजह यह है कि सोशल मीडिया अनियंत्रित मीडिया है। इसका कोई मैकेनिज्म नहीं है पत्रकारिता में प्रिंट मीडिया का इलेक्ट्रानिक मीडिया का मैकेनिज्म होता है वहां जब भी कोई समाचार बनता है तो एक प्रोसेस के बाद बनता है । एक समाचार को संवाददाता संकलित करता है डेस्क पर जाता है तो इस समाचार को उपसम्पादक जांचता है और हम लोग जब पत्रकारिता में से आये थे तो चीफ सब एडिटर और फिर न्यूज एडिटर इसके बाद एडिटर तक पहुंचता था। यानि कि कई चौनल पर उसकी जांच परख होती है और तथ्यों की जांच करने के बाद यह देखा जाता था कि उसमें कोई दुर्भावना तो नहीं है किसी तरह का कोई स्वार्थ तो नहीं है इतना करने के बाद वह न्यूज यानि के समाचार होता था। यह प्रोसेस सोशल मीडिया में नहीं है कतई भी नहीं है। कोई भी व्यक्ति सोशल मीडिया के किसी भी प्लेटफार्म पर फेसबुक पर ट्वीटर पर इंस्टाग्राम पर यू ट्यूब पर कुछ भी अललोड कर दे कुछ भी लिख दे और वो मान लिया जाता है कि यह समाचार है। लेकिन वह समाचार नहीं है वह केवल सोशल सूचना तो हो सकती है। इंफार्मेशन तो हो सकती है कि कोई भी व्यक्ति इंफार्मेशन दे सकता है किसी भी माध्यम से लेकिन वो न्यूज नहीं हो सकती। न्यूज तो तभी होगी जब एक प्रोसेस से जो स्थापित मापदडं हैं उनसे बन कर आयेगी। लेकिन इसकी ताकत बहुत है। आज यू ट्यूब ने जो यू ट्यूबर हैं। उन्होंने पूरे देश में क्षमता

को स्थापित किया है और सत्यापित किया है। इतने तरह के विरोधाभास के बाद भी तमाम तरह की आलोचनाओं के बाद भी सोशल मीडिया ने अपनी क्षमता स्थापित की है आज जो यू ट्यूबर्स हैं उनके सामने भी बड़ी समस्या है। जिलों मे उनके साथ भेदभाव भी हो रहा है। भेदभाव हम लोग भी उनके साथ करते हैं हम लोग उनको हेय दृष्टि से देखते हैं। तमाम यू ट्यूबरर्स आ जाते हैं प्रेस कांफ्रेस में तमाम जगह पहुंच जाते हैं यह बात ठीक है कि उनकी संख्या ज्यादा है वे पहुंचते हैं तो उससे असुविधा भी होती है लेकिन ये भी परिश्रम करते हैं। ऐसा नहीं कहा जा सकता कि ये परिश्रम नही करते। कई बड़े घटनाक्रम उहोंने उजागर किये हैं। एक पूर्वाचंल की घटना जो बहुत चर्चा में आयी थी नमक रोटी वाली मिड डे मील में वह यूट्यूबर की ही थी। हालांकि उस यूट्यूबर का कैसंर से कुछ दिन बाद निधन हो गया। ये ऐसी बहुत सारी घटनाएं हैं इहोंने बहुत सारे काम किये हैं। पिछला जो लोकसभा चुनाव था उसमें यू ट्यूबर्स ने अपनी क्षमता को स्थापित किया है। चुनाव को प्राभावित किया है मुद्दों को, विमर्श को बनाने में उन्होंने बहुत बड़ा योगदान किया है। वह विमर्श चाहे नकारात्मक हो या सकारात्मक हो, लेकिन उनके विमर्श बनाने के योगदान को नकारा नहीं जा सकता, ये क्षमता उनकी है। कई जिलों में जिला अधिकारियों ने आदेश जारी किये है कि यू ट्यूबर को किसी भी सरकारी कार्यालय में न आने दिया जाए। कई जगह उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। उनके सामने बड़ा संघर्ष है हांलांकि हम भी एक पत्रकार सगंठन से जुड़े हैं। अभी हम लोग उहें सदस्य् नहीं बना रहे हैं। प्रेस क्लब भी सदस्य नहीं बना रहे हैं, लेकिन आने वाले समय में हमें उन्हें रिकागनाइज करना पड़ेगा। उनके अंदर ऊर्जा है और इस ऊर्जा ने यह भी साबित कर दिया है कि यह मीडिया का युवा स्वरूप है। यह नया मीडिया जो है यह युवा मीडिया है। इनकी क्षमता का अगर हम लोगों ने सदुपयोग किया, समाज ने शासन प्रशासन ने सदुपयोग किया, नेताओं ने समामाजिक संगठनों ने यदि सदुपयोग किया, उनको अगर दिशा दी, बताया कि विवेक के साथ काम करना है तथ्यों के साथ छेड़छाड़ नहीं करनी है तथ्यों पर ही आपको काम करना है, तो ये युवा ऊर्जा सकारात्मक रूप लेकर एक बहुत बड़े निर्माण का कार्य भी कर सकती है। यदि इसे यूं ही छोड़ दिया गया फ्री, इसे हेय दृष्टि से देखकर तिरस्कार कर दिया गया तो ये नकारात्मक स्वरूप में जाएगा और नकारात्मक होकर ये विध्वंस भी कर सकता है। ऐसे में बहुत ही सजग होकर हमें इस पर विचार करना पड़ेगा और नीति बनानी पड़ेगी। हमं इस मीडिया को नकारने के बजाय इसके सकारात्मक पक्ष को समझना चाहिए। उन्हें अपने जोड़ना चाहिए और उनका कैसे उपयोग कर सकते हैं यह करना चाहिए। हमने उत्तर प्रदेश समाचार सेवा की तरफ से भी यू ट्यूब चैनल लांच किया है। सभी अखबारों चैनलों ने यू ट्यूब चैनल बनाये हैं बे मजबूर हो गए हैं यू ट्यूब चैनल बनाने के लिए। क्योंकि उसकी ताकत इतनी ज्यादा है। समाज में पहुंच उनकी इतनी ज्यादा है। इस मुद्दे को भी हमें समझना होगा और जो भविष्य के भारत की बात कर रहे हैं। भविष्य का भारत कैसा हो उसमें मीडिया की क्या भूमिका हो सकती है। तो मीडिया यही कर सकता है, लोकतंत्र को बचाने का, राष्ट्र निर्माण का, समाज में सद्भाव को बनाए रखने का एक ऐसा अभियान मीडिया चलाता रहे समाज के खिलाफ षड्यन्त्रों को उजागर करते हुए आन्तरिक सुरक्षा को बनाये रखने के लिए कुछ कर पाये तो भारत की जो कल्पना है कि भारत विश्व गुरु बनेगा तथा ''सर्वे भवन्तु सुखिन, सर्वे सन्तु निरामया'' की भावना लेकर जो भारत दुनिया में फिर से सिरमौर बनने जा रहा है उसमें मीडिया बड़ा योगदान कर सकता है पहले भी किया था और आगे भी करेंगे।

शुरु हो चुका है भारत के भाग्योदय का काल

समाज परिवर्तन के सूत्र हैं संघ द्वारा प्रस्तुत पांच विषय

श्री पदम सिंह जी

क्षेत्र प्रचार प्रमुख, उत्तर प्रदेश (पश्चिम) उत्तराखण्ड, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

आज हम सब दुनिया को समाज को, समाज की वास्तविकता दिखाने वाले अनेक प्रबुद्धजनों ने इस मीडिया को समाज का दर्पण कहा है।समाज की वास्तवकिता क्या है सच्चाई क्या है हमारे समाज को जो दर्पण वास्तविकता दिखाता है उसके सामने खड़े होना हमारा मजबूरी है। वह केवल हमारे बाहरी आवरण को व्यवस्थित कराने के लिए मजबूर करता है। यह बाह्य आवरण नहीं हमको आंतरिक आवरण दिखाना पडेगा

(उत्तर प्रदेश समाचार सेवा द्वारा 29 सितम्बर 2024 को हरिद्वार के प्रेस क्लब में आयोजित हरिद्वार रत्न सम्मान समारोह एवं पत्रिका ''अक्षरा'' के विमोचन समारोह में मुख्य अतिथि पद से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचार प्रमुख श्री पदम सिंह जी द्वारा दिये गए सारगर्भित उद्‌बोधन को यहां आलेख के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। संपादक)

स्वामी विवेकानन्द 11 सितम्बर 1893 को भारत का डंका शिकागो के मंच पर बजाने के बाद जब भारत की धरती पर आये तो उनसे कुछ सुधिजनों ने पूछा कि स्वामी जी भारत का भविष्य क्या है? तो स्वामी जी ने बड़े धैर्यभाव से उत्तर दिया। लेकिन जो उत्तर दिया उससे सुधिजन संतुष्ट नहीं हए तो स्वामी जी ने संक्षेप में उत्तर दिया कि वर्तमान में एक छोटा सा संधिकाल 175 वर्ष का आरंभ हुआ है यह वर्ष 1836 है जब संधिकाल आरंभ हुआ है। यह स्वामी जी के गुरु रामकृष्ण परमंहस का जन्म वर्ष था। दुनिया में जीवन का जो आधार है वह आध्यात्म है। आध्यात्म को जन्म देने वाली भारत भूमि है। दुनिया को जिन्दा रखना है तो भारत को जिंदा रहना ही पड़ेगा। फिर उनसे पूछा गया कि कितना समय लगेगा। सुधिजनों ने पूछा कि इस संधिकाल की अवधि कितनी है और इसकी कितनी आयु है तो उन्होंने कहा कि यह 175 वर्ष गुरुदेव के जन्म 1836 से शुरु होते हैं। इसके बाद भारत का भाग्य उदय होगा। इस तरह यदि रामकृष्ण परमहंस के

जन्म वर्ष में 175 जोड़ें तो यह 2011 होता है। आज हम सब दुनिया को, समाज को, समाज की वास्तविकता दिखाने वाले अनेक प्रबुद्धजनों ने इस मीडिया को समाज का दर्पण कहा है। समाज की वास्तवकिता क्या है, सच्चाई क्या है हमारे समाज को जो दर्पण वास्तविकता दिखाता है, उसके सामने खड़े होना हमारी मजबूरी है। वह केवल हमारे बाहरी आवरण को व्यवस्थित कराने के लिए मजबूर करता है। यह बाह्य आवरण नहीं हमको आंतरिक आवरण दिखाना पड़ेगा समाज का और यह काम मीडिया करता है। हमारे घर में भी सीसा है वह हमारी वास्तविकता दिखाता है। इसलिए जब मीडिया की बात आयी। प्रिंट मीडिया से यात्रा शुरु हुई तो इसका बदला स्वरूप इलेक्ट्रानिक मीडिया हुआ और अब सोशल मीडिया हुआ है। इसलिए जब–जब समाज को वास्तविकता दिखाने की जरूरत पड़ी है तब तब मीडिया ने समाज को यह दर्पण दिखाने का काम किया है। 1975 का समय हम सब जानते हैं मीडिया पर और सामान्य जनता पर कैसे–कैसे आरोप थे और कैसे–कैसे प्रतिबंध थे। यह हम सब लोग जानते हैं। मीडिया में काम करने वाले बहुत सारे लोगों ने जो उस समय काम कर रहे थे। उस आयु के कई आज भी यहां बैठे दिख रहे हैं। अपने एक मकान में टाइपराइटर लेकर पर्चे निकाले और समाज में बांटने का काम किसने किया था यह मीडिया ने किया था। जब–जब देश को मीडिया की आवश्यकता पड़ी तब–तब मीडिया ने समाज को वास्तविकता दिखाकर परिवर्तन करने का काम किया है। यह लड़ाई तो लम्बी है विषय लम्बा है लेकिन, भविष्य के भारत की ओर दुनिया जो देख रही है। उस भारत को वैसा बनाना है तो इसे वैसे बनाने में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्म हो जाती है। समाज परिवर्तन एक विषय संघ ने सभी देशवासियों के लिए लिया है। मैं जो समाज से चाहता हूं जीवन में अपने परिवार के अन्दर उसका दर्शन होना चाहिए। इसलिए संघ ने समाज को पांच विषय दिये हैं। उन पांच विषयों पर हमारी कलम क्या लिख सकती है? समाज को क्या दिशा दे सकती है? उन विषयों को यहा रखता हूं। सबसे पहला विषय मेरा परिवार है। इस परिवार संस्था को जन्म देने वाला जीवन देने वाला देश भारत है। इसलिए हमने कहा 'बसुधैव कुटुम्बकम'। आज परिवार की दशा क्या है। इसको छह शब्दों में कहैं तो क्या मेरे परिवार में भारतीय वेश की अधिकता है या पाश्चात्य वेश की अधिकता है। आज भारतीय परिवेश को बाहर निकालकर पाश्चात्य परिवेश को अन्दर लेकर जाया जा रहा है। हम परिवार में भारतीय परिधान का उपयोग करेंगे। दूसरा है भाषा, हमारी बाहर कोई भी भाषा हो लेकिन परिवार में घर में जब बैंठेंगे तो भारतीय भाषा, हिन्दी या लोक भाषा का प्रयोग करेंगे। जब हम भाषा को छोड़ते हैं तो नैरेटिव बदल जाता है। यह अंकल और आंटी दो शब्द आ गए देश के अन्दर। लेकिन इन दोनों

सबसे पहला विषय मेरा परिवार है। इस परिवार संस्था को जन्म देने वाला जीवन देने वाला देश भारत है। इसलिए हमने कहा बसुधैव कुटुम्बकम। आज परिवार की दशा क्या है। इसको छह शब्दों में कहैं तो क्या मेरे परिवार में भारतीय वेश की अधिकता है या पाश्चात्य वेश की अधिकता है। आज भारतीय परिवेश को बाहर निकालकर पाश्चात्य परिवेश को अन्दर लेकर जाया जा रहा है। हम परिवार में भारतीय परिधान का उपयोग करेंगे।

शब्दों ने भावनाएं संवेदनाएं और विषय खत्म कर दिये। चाची भी आंटी हो गई, मामी भी आंटी हो गई घर में काम करने वाली महिला भी आंटी हो गई। रिक्शे वाला, बच्चों को स्कूल ले जाने वाला भी अंकल हो गया। ये अंकल और आंटी ये दोनों शब्द संवेदनहीन हैं। जब संवेदनाएं नहीं तो भावनाओं का जागरण होगा क्या। इसलिए घर में मेरी जो भाषा है वह मातृभाषा है उसका प्रयोग होना चाहिए। बाहर कोई भी भाषा हो। भजन और भोजन। भजन केवल आरती करना नहीं है घंटी बजाना नहीं है। यह भजन मेरी कुल गाथा है। घर में बैठकर कभी भजन होता है क्या, सत्संग होता है क्या। जब आज इधर घूमता हूं तो पता चलता है कि जो पंजाबी समाज यहां आया तो वे बताते हैं कि हमारे पूर्वजों ने रिक्शा चलाया। आज यह बात बताने में, इस कथा को बताने में कोई सकोच होता है क्या। जड़ों से जोडकर रखने के लिए यह भजन जरूरी है।

शून्य से लेकर शिखर तक पहुंचने की यात्रा का नाम भी भजन है। क्या उनका वर्णन नहीं हो सकता है। भोजन तामसिक भोजन है या सात्विक है जिस भोजन को मैं ग्रहण कर रहा हूं वह भोजन भगवान को अर्तिप करने वाला है क्या है। भवन और भ्रमण। भगवान के घर को देखकर, मन्दिर को देखकर, मस्जिद को देखकर ही पता चल जाता है कि यह क्या है। इसी तरह किसी घर को देखकर कोई बता सकता है कि यह किसका घर है। यह किसी सनातनी का घर या है या किसी हिन्दू का घर है। किसी मुसलमान का घर है या किसी ईसाई का घर है। मैं किसी परम्परा से जुड़ा हूं, मेरा घर पर कोई पहचान है क्या। यह विषय विचार करने का बनता नहीं क्या, मेरे घर में आने पर ही पता चल जाए कि घर में महापुरुषों के चित्र हैं या नायक और नायिकाओं के चित्र हैं। मेरा घर का परिवेश मन्दिर जैसा क्यों नहीं बन सकता। यह विचार करने की जरूरत है। हम भ्रमण के लिए जाते हैं, पर्यटन की दृष्टि के साथ जाते हैं। लेकिन किसी धार्मिक स्थान पर वर्ष में एक या दो बार परिवार के साथ जाते हैं क्या, उस स्थान का महत्व क्या है उसकी मर्यादा क्या है। तो किसी धार्मिक स्थल पर कुछ ग्रहण करने के लिए जाना है रील बनाने के लिए नहीं जाना है। कोई ऐतिहासिक स्थान हो सकता है। कोई सामाजिक चेतना जगाने का स्थान हो सकता है। कोई सेवा का स्थान हो सकता है। दूसरा विषय पर्यावरण। यह केवल मेरी समस्या नहीं है। जल, जंगल, जमीन पंच महाभूत से मिलकर मेरा शरीर बना है। आकाश वायु और जल इन तीनों

को हमने दूषित कर दिया। आर. ओ का एक लीटर जल लेने के लिए आठ लीटर जल नाली में बहता है। यह आठ लीटर पानी पेड़ों के काम आ सकता है, बर्तन धुलने के काम आ सकता है। हम जल बचा सकते हैं। हम अपने जन्म दिवस पर एक फलदार वृक्ष लगा सकते हैं और उसके अगले साल तक उसे पालने का संकल्प ले सकते हैं क्या? इसके लिए किसी सरकार की आवश्यकता नहीं है तो पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए। जल को एक व्यक्ति एक घर में दस लीटर बचा सकता है इसलिए पर्वारण की दृष्टि से दोनों महत्वपूर्ण हैं। फिर तीसरा विषय हमने कहा कि सामाजिक समरसता। हमारे हिन्दू धर्म में कहा गया कि कीट पंतंगों के अन्दर, पेड़ो के अदर सबके अन्दर एक ही परमात्मा है हमने तो हिमालय को भी कहा है जिसे एवरेस्ट कहते हैं उसकी ऊंचाई प्रतिवर्ष बढ़ रही है। हमने उसके अदर भी जीवन माना है अगर सबके अन्दर जड़ चेतन के अदर एक ही परमात्मा है तो मैं मेरे जैसे हाड़ मांस का बना दूसरे व्यक्ति से उससे कैंसे भेद करता हूं क्यों भेद करता हूं। ये बोलने भाषण का विषय नहीं है। मैं उस घर में भोजन कर आता हूं चाय पी आता हूं उतने से काम नहीं चलेगा। वह भी मेरे घर में उसी भाव से आकर चाय पी सकता है पानी पी सकता है क्या? ऐसी स्थिति बनी क्या। यह सामाजिक समरसता भाषण का विषय नहीं है मेरे घर से इस समाजिक समरसता की शुरुआत हो सकती है क्या? यह भारत है, तो इस भारत को, भारत बनाने के लिए हम सबकों एक होना पड़ेगा। हमारे यहां शास्त्रों ने कहा है कि सबके अन्दर एक ही परमात्मा है। चौथा विषय हमने कहा, स्व का जागरण। स्व का अर्थ स्वदेशी वस्त्रों का ही उपयोग करने से नहीं, स्व मेरे महापुरुष कौन हैं? मैं जिस गोत्र में जन्मा हूं उस गोत्र को किस ऋषि ने दिया है। मेरी भाषा क्या है मेरी संस्कृति क्या है मेरी परंपरा क्या है? मेरे कुल में कौन है फिर उसमें से स्व का जागरण होता है अर्थात मैं अपने पूर्वजों पर गर्व और गौरव करने लगता हूं। तो कोई लालच, जीवन का भी लालच मुझे डिगा नहीं पाता। तो स्व का जागरण इसमें स्वदेशी भी एक कारण है स्वदेशी अपनी भाषा, संस्कृति परंपराएं महापुरुष गर्व और गौरव करने का विषय है। यह चौथा विषय है। पांचवा विषय नागरिक कर्तव्य। संविधान ने अधिकार तो दे दिये उन अधिकारों से स्वतंत्रता मिल रही है। आज हम सब उन अधिकारों को प्राप्त करने में लगे हैं। अपने अधिकारों के साथ नहीं, अपने कर्तव्यों के साथ जीना प्रारम्भ कर सकता हूं क्या? आज भाई भाई से अधिकारों के लिए मांग करता है। घर के अदर दीवार खड़ी करना यह अधिकार है उस घर को और सुन्दर बनाना यह कर्तव्य है। नागरिक कर्तव्य की शुरुआत यहां से होती है कि मेरे कारण किसी को कोई कष्ट नहीं होना चाहिए। देश समाज को अपने घर को अच्छा बनाने के लिये मुझे क्या–क्या करना है। इन पांच बिन्दुओं पर हमारी लेखनी कुछ काम कर सकती है क्या? भविष्य का भारत निश्चित रूप से दुनिया की अपेक्षाओं को पूरा करेगा इसमें कोई दो राय नहीं हैं। स्वामी विवेकानन्द जैसे महापुरष बोल कर गए हैं। उस चित्र को देखने से काम नहीं चलेगा उस चित्र को पुरुषार्थ करना पड़ेगा और पुरुषार्थ का प्रारम्भ स्वयं से करना पड़ेगा और मेरे पास जो लेखनी है उससे में हजारों परिवारों को परिर्वतन का एक रास्ता बता सकता हूं। इस भविष्य के भारत को गढ़ने में मीडिया की महती भूमिका है। इस भूमिका का चयन इस भूमिका का प्रारम्भ मे जिस भी मीडिया से जुडा हूं प्रिंट होगा, इलेक्ट्रानिक होगा, सोशल मीडिया होगा। इसके माध्यम से समाज परिर्वतन में मेरी भूमिका कैसी हो सकती है? मैं इसका विचार कर सकता हूं। देश और समाज को आवश्यकता है। मीडिया ने अपने प्राणों को संकट में डालकर अपने दायित्व का पालन किया है। उसके कारण देश का भविष्य परिवर्तन हुआ है। देश के इतिहास को गढ़ने में हमारी महत्वपूर्ण भूमिका है। आधारभूत भूमिका में हम निर्वहन करेंगे और कर ही रहे हैं।

उत्तर प्रदेश समाचार सेवा
सम्मान समारोह

उत्तर प्रदेश समाचार सेवा ने किया हरिद्वार के 8 पत्रकारों को सम्मानित

सोशल मीडिया को और अधिक परिष्कृत करने की आवश्यकताः **रवि बहादुर**

हरिद्वार। समाचार एजेंसी 'उत्तर प्रदेश समाचार सेवा' की और से प्रेस क्लब में 29 सितम्बर 2024 को आयोजित कार्यक्रम में 8 वरिष्ठ पत्रकारों को :हरिद्वार रत्न सम्मान' से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि ज्वालापुर विधायक रवि बहादुर जी, विशिष्ट अतिथि संघ प्रचारक पदम सिंह जी, उत्तर प्रदेश समाचार सेवा के संपादक सर्वेश कुमार सिंह, कार्यक्रम संयोजक उत्तर प्रदेश समाचार सेवा' के ब्यूरो चीफ रामचंद्र कन्नौजिया, एनयूजेआई के जिलाध्यक्ष आदेश त्यागी, प्रैस क्लब अध्यक्ष अमित शर्मा, महामंत्री डा.प्रदीप जोशी ने मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। इस दौरान उत्तर प्रदेश समाचार सेवा की पत्रिका 'अक्षरा' के विशेषांक का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उत्तर प्रदेश समाचार सेवा के संपादक सर्वेश कुमार सिंह ने कहा 15 फरवरी 2003 में शुरुआत के बाद बीस वर्षो में उत्तर प्रदेश समाचार सेवा ने एक लंबा सफर तय किया है। समाचार एजेंसी की पत्रिका अक्षरा के विशेषांक में पिछले 20 वर्ष की महत्वपूर्ण घटनाओं को समाहित करने का प्रयास किया गया है। सर्वेश कुमार सिंह ने कहा कि समाचार

ज्वालापुर विधायक रवि बहादुर जी ने उत्तर प्रदेश समाचार सेवा के 20 वर्ष पूरे होने की शुभकामनाएं दी और प्रिंट मीडिया के महत्व को रेखांकित करते हुए सोशल मीडिया में सुधार की आवश्यकता बतायी।

तमाम बदलावों के बावजूद पत्रकारिता में प्रिंट मीडिया अपनी प्रमुख भूमिका में आज भी है। लेकिन अन्य माध्यमों के योगदान को भी नकारा नहीं जा सकता। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की भी अपनी एक उपयोगिता है। विश्वनीयता के मामले में प्रिंट मीडिया आज भी पहले स्थान पर है। उन्होंने कहा कि मीडिया के किसी भी स्वरूप को नकारने के बजाए उसके सकारात्मक पहलू को स्वीकार किया जाना चाहिए।

सेवा लगातार संघर्षो के बीच पत्रकारिता सफलतापूर्वक आगे बढ़ रही है। बदलाव के साथ पत्रकारिता का स्वरुप भी बदला है। बदलावों के दौर में समाचार चैनल आए। उसके बाद अब सोशल मीडिया का दौर चल रहा है। लेकिन तमाम बदलावों के बावजूद पत्रकारिता में प्रिंट मीडिया अपनी प्रमुख भूमिका में आज भी है। लेकिन अन्य माध्यमों के योगदान को भी नकारा नहीं जा सकता। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की भी अपनी एक उपयोगिता है। लेकिन विश्वनीयता के मामले में प्रिंट मीडिया आज भी पहले स्थान पर है। उन्होंने कहा कि मीडिया के किसी भी स्वरूप को नकारने के बजाए उसके सकारात्मक पहलू को स्वीकार किया जाना चाहिए। ज्वालापुर विधायक रवि बहादुर जी ने उत्तर प्रदेश समाचार सेवा के 20 वर्ष पूरे होने की शुभकामनाएं दी और प्रिंट मीडिया के महत्व को रेखांकित करते हुए सोशल मीडिया में सुधार की आवश्यकता बतायी। आरएसएस के क्षेत्र प्रचारक पदम सिंह ने विचार रखते हुए राष्ट्र निर्माण में मीडिया की उपयोगिता और योगदान पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला। पदम सिंह ने परिवार, समाज, पर्यावरण आदि मुद्दों पर काम करने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम संयोजक रामचंद्र कन्नौजिया व कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे एनयूजेआई के जिलाध्यक्ष आदेश त्यागी ने सभी का आभार जताया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार संजय आर्य ने किया।

उत्तर प्रदेश समाचार सेवा की पत्रिका अक्षरा का हरिद्वार प्रेस क्लब में हुआ विमोचन समारोह

इन पत्रकारों को किया गया सम्मानित

नरेश गुप्ता, मुकेश वर्मा, राजकुमार, बालकृष्ण शास्त्री, श्रवण झा, राजेश शर्मा, राव रियासत पुण्डीर, डा.प्रदीप जोशी को अंगवस्त्र पहनाकर व स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में विक्रम छाछर, डा.योगेश योगी, शिवा अग्रवाल, राधिका नागरथ, कुमकुम शर्मा, सुरेश आर्य, डा.हिमांशु द्विवेदी, कुलभूषण शर्मा, विजेंद्र हर्ष, काशीराम सैनी, महेश पारीख,नौशाद खान, रोहित सिखोला, अमित गुप्ता, नीरज छाछर, संजय रावल, दयाशंकर वर्मा, दीपक नोटियाल, सूर्यकांत बेलवाल, राजेंद्रनाथ गोस्वामी, देवेंद्र शर्मा, अनिल भास्कर, डा.परविन्दर, मनोज खन्ना, कुमार दुष्यंत, लव शर्मा, आशीष मिश्रा, रूपेश शर्मा, अरूण शर्मा, ठाकुर शैलेंद्र सिंह, जहांगीर मलिक, पुलकित शुक्ला, सचिन सैनी, राजकुमार पाल, आशीष धीमान, कमल मिश्रा, कमल अग्रवाल, दिव्यांश शर्मा, देवेश गौतम, हरीश कुमार, जीतू आदि सहित बड़ी संख्या में पत्रकार मौजूद रहे।

भगवान राम के जन्म का कारक है मखौड़ा धाम

राजा दशरथ ने यहां किया था पुत्र कामेष्ठि यज्ञ, यज्ञ प्रसाद ग्रहण करने के बाद हुआ था राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुध्न का जन्म

जयंत कुमार मिश्रा
वरिष्ठ संवाददाता,
उ.प्र.समाचार सेवा,बस्ती

बस्ती जिले के मखौड़ा धाम को भगवान राम के जन्म के कारक के रूप में जाना जाता है। अयोध्या के प्रवेश द्वार पर बसे बस्ती जनपद के हर्रैया तहसील क्षेत्र स्थित मखौड़ा धाम में ही राजा दशरथ ने पुत्रेष्ठि यज्ञ किया था। इसके बाद राजा दशरथ के चार पुत्र राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुध्न का जन्म हुआ था। मखौड़ा धाम को ऋषियों की तपोभूमि होने का गौरव प्राप्त है। आज भी लोग यहां पुत्र की कामना लेकर अनुष्ठान करने देश के कोने–कोने से आते हैं।

हर्रैया तहसील क्षेत्र का मखौड़ा धाम पौराणिक स्थल है। त्रेता युग में ऋषियों ने इस स्थान को यज्ञ और अनुष्ठान के लिए सर्वोत्तम भूमि के रूप् में चुना था। जब महाराज दशरथ को उम्र के चौथेपन तक संतान की उत्पत्ति नहीं हुई तो समूचा राजपरिवार चिंतित हो गया। राजगुरु, ऋषि, मुनियों के साथ प्रजा भी चिंतित रहने लगी। राजा दशरथ ने कुलगुरू महर्षि वशिष्ठ को अपनी चिंता बतायी तो उनके द्वारा उन्हें पुत्र कामेष्ठि यज्ञ संपन्न कराने की सलाह दी

गई। ऋषियों ने इस विशेष यज्ञ के लिए पावन भूमि की खोज शुरु की, जो मख क्षेत्र में आकर समाप्त हुई। कुलगुरु महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र जी ने भूमि शोधन करने के बाद इसे अनुष्ठान के लिए सर्वोत्तम भूमि बताया। इसके बाद यहां श्रृंगीऋषि की मदद से पुत्र कामेष्ठि यज्ञ संपन्न कराने की तैयारी शुरु हुई। यज्ञ के लिए सर्वोत्तम भूमि का चयन होने के बाद पवित्र जल के आचमन से यज्ञ संपन्न होने की समस्या आई। जिस पर गुरु वशिष्ठ ने महाराज दशरथ को सलाह दी कि यज्ञ भूमि के सन्निकट तिरें तालाब पर तपस्या रत महर्षि उद्दालक जी की शरण में जाएं तो निदान अवश्य होगा। इसके बाद राजा दशरथ महर्षि उद्दालक जी की शरण में पहुंचे, उनसे अनुनय विनय किया, जिस पर प्रसन्न होकर उन्होंने तालाब से अपनी तर्जनी उंगली से एक रेखा खींची, जिसे मनोरमा नदी के रूप में मान्यता मिली। इसी कारण इसे गंगा की सातवीं धारा व उद्दालिकी गंगा नाम से पुराणों में स्थान मिला। यहां पर यज्ञ संपन्न होने के बाद प्राप्त हव्य यानी प्रसाद को राजा दशरथ की तीनों रानियों को समान भाग में सेवन के लिए बांटा गया। जिसमें से एक तिहाई हव्य का अंश महारानी कौशल्या, कैकई ने अपने से छोटी रानी सुमित्रा को छोटी बहन के रूप में दे दिया। जिसके फलस्वरूप महारानी कौशल्या से राम, कैकई से भरत तथा हव्य का ज्यादा हिस्सा सेवन करने से सुमित्रा से लक्ष्मण व शत्रुध्न का जन्म हुआ। यह भी कहा जाता है कि राजा दशरथ और कौशल्या जी की बेटी शांता जो श्रृंगीऋषि की पत्नी थी, उन्होंने यज्ञकुंड से बाहर खीर का बर्तन निकाला, जिसे श्रृंगी ऋषि ने राजा दशरथ को दिया। उसे अपनी तीनों रानियों के बीच वितरित करने की सलाह दी। राजा दशरथ ने पुत्र कामेष्ठि यज्ञ संपन्न होने के बाद प्राप्त प्रसाद (खीर) को अपनी रानियों को दिया। पुत्र कामेष्ठि यज्ञ के उपरांत मिले प्रसाद को ग्रहण करने के बाद ही राजा दशरथ के चारों पुत्रों का जन्म हुआ। मखौड़ा धाम में चैत्रमास की पूर्णिमा को वार्षिक मेला लगता है। अमोढ़ा धाम के पास ऐतिहासिक राम रेखा मंदिर भी है, जिसे राजा जालिम सिंह के राज्य अमोढ़ा के नाम से भी जाना जाता है। यहां सड़क मार्ग से जाया जा सकता है। अयोध्या में भव्य श्री राम मंदिर के निर्माण, राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद मखौड़ा धाम को विकसित करने की दिशा में प्रयास किया जा रहा है।

हरैया तहसील क्षेत्र का मखौड़ा धाम पौराणिक स्थल है। त्रेता युग में ऋषियों ने इस स्थान को यज्ञ और अनुष्ठान के लिए सर्वोत्तम भूमि के रूप् में चुना था। जब महाराज दशरथ को उम्र के चौथेपन तक संतान की उत्पत्ति नहीं हुई तो समूचा राजपरिवार चिंतित हो गया। राजगुरु, ऋषि, मुनियों के साथ प्रजा भी चिंतित रहने लगी। राजा दशरथ ने कुलगुरू महर्षि वशिष्ठ को अपनी चिंता बतायी तो उनके द्वारा उन्हें पुत्र कामेष्ठि यज्ञ संपन्न कराने की सलाह दी गई। ऋषियों ने इस विशेष यज्ञ के लिए पावन भूमि की खोज शुरु की, जो मख क्षेत्र में आकर समाप्त हुई।

भगवान राम के जन्म के कारक मखौड़ा धाम के महत्व से परिचित कराने की दिशा में सरकार ने पहल की है जिससे इस गौरवशाली स्थल से पूरा देश परिचित हो सके।

कार्यालय नगर पालिका परिषद् सीतापुर

स्वच्छ सर्वेक्षण 2.0

नगर पालिका परिषद् अपने समस्त निवासियों से 26 जनवरी 2025 गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में अपील करती है कि

1 नागरिकों से अपील है कि घर–घर कचरा संग्रहण की प्रक्रिया में समस्त जनता पूर्ण सहयोग प्रदान करे एवं घर में सूखा और गीला कचरा अलग–अलग किया जाए। सूखा कचरा नीले में व गीला कचरा हरे कचरा पात्र में ही डालें। इसी प्रकार नगर पालिका की गाडियों में प्रतिदिन सूखा व गीला कचरा रीसाइकल करें।

2 आप अपने घरों में एक कूड़ेदान में गीला कचरा हरा डिब्बे व सूखा कचरा नीला डिब्बे में अवश्य रखें।

3 नगर में निर्मित सामुदायिक शौचालय, सार्वजनिक शौचालय यूरिनल निर्मित पिंक शौचालयों का सदैव प्रयोग करें। खुले में शौच तथा पेशाब न करें। स्वच्छता में सहयोग करें।

4 सिंगिल यूज प्लास्टिक, प्लास्टिक युक्त सामग्री का यूज न करें और न ही दूसरों को करने दें। पालिथीन पर्यावरण के लिए हानिकारक है। पालिथीन का प्रयोग विक्रय करते पाये जाने पर मु. 50,000.00 तक जुर्माना का प्राविधान है।

5 अपने जानवरों को खुला न छोड़ें तथा सड़कों व सार्वजनिक स्थानों पर न बांधें।

6 चाय की बिक्री में कांच के गिलास व कुल्हड का प्रयोग करें। प्लास्टिक के गिलास का प्रयोग न करें।

7 मार्गों व गलियों में किसी प्रकार का अतिक्रमण न करें।

8 जन्म–मृत्यु का पंजीकरण 21 दिनों के अंदर कराकर निःशुल्क प्रमाण पत्र प्राप्त करें।

9 बकाया करों के सरचार्ज में छूट का लाभ उठाए जाने हेतु करों की अदायगी करें।

10 जल का दुरुपयोग रोके जाने हेतु नलों की टंकी खुली न छोड़ें ।

वैभव त्रिपाठी
अधिशासी अधिकारी श्रेणी–1
नगर पालिका परिषद सीतापुर

नेहा अवस्थी
अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद सीतापुर

समस्त सभासदगण तथा समस्त कर्मचारीगण नगर पालिका परिषद सीतापुर

ललितपुर के ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थल

अजय बरया
ब्यूरो चीफ
उत्तर प्रदेश समाचार सेवा

ललितपुर जिले में सभी धर्मों को मानने वाले लोग निवास करते हैं। इन सबके अपने–अपने स्थल आज तीर्थ के रूप में पूज्यनीय हैं, आइये जाने इन ऐतिहासिक तीर्थो के बारे में

देवगढ़

ललितपुर से 33 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ऐतिहासिक स्थल के रूप में जाना जाता है। यह जगह बेतवा नदी के तट पर स्थित है। इस जगह पर गुप्त, गुर्जर प्रतिहार, गौड़, मुगल, बुंदेला और मराठों के वंश के कई ऐतिहासिक स्मारक और किले आज भी मौजूद हैं। इसके अलावा यहां कई हिन्दू और जैन मंदिर भी स्थित हैं।

हजारिया महादेव

यह मंदिर ललितपुर जिले की तालबेहट तहसील में स्थित है। यहां पर भगवान भोलेनाथ का केवल एक शिवलिंग है, जिसमें उनके हजारों रूप स्थित हैं। जो हजारिया महादेव मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है

देवगढ जैन मंदिर

यह मंदिर ललितपुर जिले में स्थित देवगढ़ तीर्थ का प्रमुख जैन मंदिर है। यह मंदिर जैन तीर्थंकर शांतिनाथ को समर्पित है। यह मंदिर भारत के काफी पुराने जैन मंदिरों में से एक है। मंदिर में स्थित स्तम्भों पर 18 भिन्न–भिन्न भाषाओं में लिपियां लिखी हुई हैं। मंदिर में स्थित स्तम्भ यहां के आकर्षण के प्रमुख केन्द्र हैं, जो विश्व प्रसिद्ध हैं।

रणछोड़ जी

यह जगह बेतवा नदी के तट पर स्थित धौर्रा से लगभग 4 से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। त्रिमूर्ति मंदिर के समीप यहां भगवान विष्णु

और देवी माता की बेहतरीन मूर्तियां स्थापित हैं। इसके अलावा प्राचीन समय के कई मंदिर यहां स्थित हैं। कुछ समय पहले यह जगह सघन जंगलों से घिरी हुई थी।

अंजनी माता

अंजनी माता का मंदिर महरौनी से 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जहां पर अंजनी माता अपनी गोद में बालरूप हनुमान जी को स्तन पान करा रही हैं।

मुचकुंद गुफा

यह गुफा रणछोर जी से 2 से 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है,जो पहाड़ों के बीच में बनी हुई है। यहां पर भगवान श्रीकृष्ण द्वापर युग में कालयवन नामक राक्षस को अपने पीछे–पीछे दौड़ाकर ले गये थे और वहां जाकर अपना पीताम्बर मुचकुंद ऋषि के ऊपर डाल दिया था। उनका पीछा करते–करते कालयवन भी वहां पहुंच गया और पीताम्बर देखकर उन्हें भगवान श्रीकृष्ण समझ उनसे अनुचित शब्दों का प्रयोग कर उन्हें जगाने लगा। तब मुचकुंद ऋषि कच्ची नींद से जागे और जैसे ही उन्होंने उसकी ओर देखा वह जलकर भस्म हो गया।

अमझरा वाले हनुमान जी

यह मंदिर उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के बॉर्डर पर विंध्याचल की पर्वतमालाओं के बीचों–बीच स्थित है। यह मंदिर नाराहट के राव साहब द्वारा निर्मित है। यहां प्रतिवर्ष बसंत पंचमी के समय 15 दिन मेला लगता है।

सदनशाह

भगवान श्रीकृष्ण द्वापर युग में कालयवन नामक राक्षस को अपने पीछे–पीछे दौड़ाकर ले गये थे और वहां जाकर अपना पीताम्बर मुचकुंद ऋषि के ऊपर डाल दिया था। उनका पीछा करते–करते कालयवन भी वहां पहुंच गया और पीताम्बर देखकर उन्हें भगवान श्रीकृष्ण समझ उनसे अनुचित शब्दों का प्रयोग कर उन्हें जगाने लगा। तब मुचकुंद ऋषि कच्ची नींद से जागे और जैसे ही उन्होंने उसकी ओर देखा वह जलकर भस्म हो गया।

सदनशाह बाबा भले ही मुस्लिम थे परंतु वह हिंदुओं को समान दृष्टि से देखते थे जिनका नाम हिंदू धर्म के भक्तमाल नामक ग्रंथ में मिलता है। बताया जाता है कि उनके पास एक ऐसा चमत्कारी पत्थर था, जिससे वह किसी भी वस्तु की तोल कर लेते थे। चाहे वह एक किलोग्राम हो या पांच किलोग्राम, या सौ किलोग्राम। बाबा सदन शाह दरगाह पर सालाना 31 मार्च से विशाल उर्स का आयोजन किया जाता है जिसमें देश–विदेश की कव्वाल शामिल होते हैं

दशावतार मंदिर

यह मंदिर देवगढ़ में स्थित है तथा यह भगवान विष्णु को समर्पित है। इस मंदिर की वास्तु कला काफी सुंदर और खूबसूरत है पहले इस मंदिर को भारत के पंचायतन मंदिर के नाम से जाना जाता था, जो विश्व प्रसिद्ध है।

नील कंठेश्वर

ललितपुर के दक्षिण में 45 किलोमीटर की दूरी पर स्थित घने जंगलों के मध्य स्थित नील कंठेश्वर मंदिर (शिव त्रिमूर्ति मंदिर) चंदेल शासन के समय का है। इस मंदिर में प्रवेश द्वार के ठीक सामने परम शिव त्रिमूर्ति स्थित है। शिव

त्रिमूर्ति में एक मुखलिंग स्थित है।

च्यवन ऋषि

यह मंदिर बंट और पाली के बीच में पहाड़ी पर स्थित है, जो काफी प्राचीन है। यहां पर च्यवन ऋषि ने बैठकर हनुमान जी की तपस्या की थी। यहां पर एक झरना भी है।

राखपंचमपुर

राखपंचमपुर में सिद्ध बाबा हनुमान जी का मंदिर है, जहां पर चर्म रोग से पीड़ित रोगी आते हैं। जैसे फोड़ा–फुंसी, दाद, खाज–खुजली आदि यहां सिद्ध बाबा की धूप लगाने से ही ये रोग मिट जाते हैं। हर साल रंगपंचमी के दिन यहां बड़ा विशाल मेला लगता है, जिसमें अन्य जिलों तथा कई प्रदेशों के लोग यहां दर्शन के लिए आते हैं।

चांदपुर जहाजपुर

यह स्थान जनपद की धौर्रा रेलवे स्टेशन में घने जंगल में आधा किलोमीटर की दूरी पर स्थित है यहां पर कई किलोमीटर की परिधि में जैन एवं हिंदू धर्म की कई मूर्तियों के अवशेष बिखरे पड़े हैं तथा यहां पर 17 फीट ऊंची शांतिनाथ भगवान की मूर्ति स्थापित है

देवामाता

देवामाता का मंदिर तेरई फाटक से 2 किलोमीटर की दूरी पर है। बताया जाता है कि यहां पत्थर की एक शिला थी। बाद में मंदिर का निर्माण कराया गया, जिनकी पूजा अर्चना करने वाले पुजारी जी फक्कड़ बाबा के नाम से प्रसिद्ध थे।

झूमरनाथ मंदिर

यह मंदिर बार ब्लॉक के पास पारौल नामक गांव में स्थित है। यहां पर भगवान भोलेनाथ का एक प्रसिद्ध मंदिर है, जहां पर हर वर्ष संक्रांति पर मेला लगता है तथा भण्डारा भी होता है।

उ० प्र० समाचार सेवा के सांस्कृतिक गौरव विशेषांक के प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

मीडिया फाउण्डेशन समिति (रजि.)

- मिडिया गतिविधियाँ
- समाचार सेवा
- वेब पोर्टल
- पत्रिका प्रकाशन
- संगोष्ठी, सम्मेलन

उ.प्र. समाचार सेवा
MEDIA Foundation

कार्यालय : 117, प्रथम तल, प्रिंस काम्पलेक्स, हजरतगंज, लखनऊ-226 001
मो०: 9453272129

कार्यालय नगर पालिका परिषद लहरपुर (सीतापुर)

76वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर नगर पालिका परिषद् लहरपुर अपने नागरिकों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करती है।

अपील एवं उपलब्धियां

1 प्रतिबंधित सिंगिल यूज प्लास्टिक का प्रयोग न करें और न ही दूसरों को करने दें। सिंगिल यूज प्लास्टिक पर्यावरण के लिए हानिकारक है। सिंगिल यूज प्लास्टिक का प्रयोग करते व विक्रय करते पाये जाने पर आपके विरुद्ध रूपये 25000 तक का जुर्माना हो सकता है।
2 सार्वजनिक स्थानों पर कटे फल व खुले में चाट पकोड़े आदि बनाना व बेचना प्रतिबंधित है।
3 सार्वजनिक स्थानों पर थूकना, पेशाब करना दण्डनीय अपराध है।
4 आपसे निवेदन है कि आप अपने घर में एक कूड़ेदान नीला सूखा कूडे के लिए व एक हरा कूड़ादान गीला कूड़े के लिए अवश्य रखें।
5 डोर टू डोर कूड़ा कलेक्शन के अन्तर्गत कर्मचारी आपके घरों तक पहुंच रहे हैं। कृपया अपना कूड़ा अलग–अलग कर उन्हें दें। सड़क या नाली में न फेंकें।
6 सभी पशुपालकों से निवेदन है कि अपने पालतू जानवरों को चिन्हित करके रखें। उन्हें आवारा न घूमने दें और गंदगी न करने दें। ऐसा करने पर जुर्माना किया जाएगा।
7 नगर पालिका परिषद लहरपुर के अन्तर्गत बने सार्वजनिक /सामुदायिक शौचालय समस्त नगारिकों के लिए निःशुल्क खुला रहेगा। कृपया शौचालयों का ही उपयोग करें।
8 स्वच्छता को अपनी आदत बनायें और साफ सफाई रखकर अपने आस पास के वातावरण को स्वच्छ रखें।
9 खुले में शौच व मूत्र विसर्जन न करें। घर में बने शौचालय या सार्वजनिक शौचालय व मूत्रालय का ही प्रयोग करें।
10 स्वच्छता ऐप का प्रयोग करें। सवच्छता सम्बन्धी शिकायत का समाधान पाएं।
11 प्रत्येक तीन वर्ष में अपना सेप्टिक टैंक अवश्य खाली कराएं। किसी भी प्राइवेट सेप्टिक टेंक आपरेटर से टैंक खाली न कराएं अन्यथा अर्थदण्ड रूपये 5000 वसूल किया जाएगा।
12 पेड़ पौधे लगाकर पर्यावरण को स्वच्छ बनाएं।
13 जल ही जीवन है इसका दुरुपयोग न करें।
14 पालिका द्वारा पेयजल व्यवस्था हेतु स्थापित 16 मिनी पंप तथा 03 बड़े पंपों से पेयजल व्यवस्था सुनिश्चित की जा रही है।
15 लहरपुर बिसवां गेट पर 100 फिट ऊंचे तिरंगे झण्डे का अधिस्थापन कार्य कराया गया है।
16 प्रकाश व्यवस्था हेतू पूरे नगर के समस्त पोलों पर तिरंगा रोप लगाई गई है तथा पूरे नगर में 500 लाइटें 45 वाट व पूरे डिवाइजर रोड पर तितली लाइटें लगायी गई हैं तथा पूरे नगर में सभी खम्भों पर लाईटों की मरम्मत भी करा दी गई है।

अनरुद्ध कुमार
अधिशासी अधिकारी
नगर पालिका परिषद लहरपुर

जावेद अहमद
अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद लहरपुर

समस्त सभासदगण नगर पालिका परिषद लहरपुर

महाकुम्भ 2025
प्रखर परोपकार मिशन शिविर में राम कथा

राम के जीवन चरित्र की महिमा अवर्णनीय

महामण्डलेश्वर स्वामी प्रखर जी महाराज

महाकुम्भ 2025 में प्रयाग राज स्थित संगम तट पर प्रखर परोपकार मिशन शिविर के कथा मण्डप में सांयकालीन सत्र में श्रीराम कथा का आयोजन हुआ।

कथा का शुभारम्भ महामण्डलेश्वर स्वामी प्रखर जी महाराज ने किया। स्वामी प्रखर जी महाराज ने कहा कि भगवान राम के जीवन चरित्र की महिमा अवर्णनीय है। उनकी महिमा का गुणगान यदि जीवन भर भी किया जाए तो भी उनकी महिमा का सम्पूर्ण गुणगान सम्भव नहीं है। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीराम की कथा रूपी संसार में जो अवगाहन करता है उसके जन्म जन्मान्तर के पाप नष्ट हो जाते हैं।

उन्होने उपस्थित श्रोताओं को सरल शब्दों में समझाते हुए कहा कि जैसे नदी के एक किनारे से दूसरे किनारे तक जाने के लिए सरकारी मशीनरी का उपयोग कर पुल का निर्माण किया जाता है तो वह पुल सबके लिए नदी पार करने का माध्यम बन जाता है। एक चींटी भी उस पुल के माध्यम से नदी पार कर सकती है। ठीक उसी प्रकार मेरे द्वारा भगवान श्रीराम जी की कथा रूपी यह पुल आम जन के लिए निर्मित कर प्रस्तुत किया गया है ताकि श्रवण के माध्यम से हर श्रोता के भवसागर से पार जाने का मार्ग प्रशस्त हो सके।

श्रीराम कथा का श्रवण कराते हुए महामण्डलेश्वर स्वामी प्रखर जी महाराज ने कहा कि भगवान श्रीराम के नाम के दो अश्ररों में ही पूरी रामरायण और पूरे शास्त्र निहित हैं। उन्होंने कहा कि ज्ञान,कर्म, ध्यान, योग तप आदि करने में जो अक्षम हों वे केवल राम नाम का जप करने लगें तो उनको यह राम नाम का जप ही भवसागर से पार ले जाने वाला सिद्ध होगा। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीराम की महिमा का वर्णन भगवान शिव से सुनकर माता पार्वती भी उनके नाम का जप करती हैं।

भगवान राम की सेवा कि लिए ही भगवान शिव हनुमान जी का अवतार लेकर उनके नाम का जप करते रहते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे श्रीराम का नाम लिखना, सुनना और बोलना भवसागर से तो पार लगाता ही है साथ ही यह अपने भक्तों को सभी प्रकार के दैहिक, दैविक एवं भौतिक तापों से मुक्ति प्रदान करता है। प्रखर जी महाराज ने कहा कि राम नाम के जप में इतनी शक्ति है कि उनके नाम का उल्टा जप करने वाले महर्षि बाल्मीकि जी एव गोस्वामी तुलसीदास जी अज्ञानी से महाज्ञानी बने। बाल्मीकि ने रामायण और तुलसीदास ने

उत्तर प्रदेश समाचार सेवा

के स्थापना दिवस पर प्रकाशित

सांस्कृतिक गौरव विशेषांक

अभ्युदय

के प्रकाशन पर

हार्दिक शुभकामनाएं

उत्तराखण्ड जल संस्थान
हरिद्वार

रामचरित मानस की रचना की।

भगवान श्रीराम के जीवन से मिले संदेश के विषय में बताते हुए स्वामी प्रखर जी महाराज ने कहा कि भगवान श्रीराम का जीवन मानव मात्र को मर्यादा एवं चरित्र के साथ–साथ जीवन जीने की कला की शिक्षा देने वाला है। उन्होंने कहा कि राम कथा सबसे पहले भगवान शिव ने पार्वती को सुनाई थी। भगवान श्रीराम के जीवन चरित्र की कथा ऐसी पावन कथा है जो मानव जीवन को समस्त दुखों से मुक्ति दिलाकर उसके मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करती है। महाराजश्री ने भगवान शंकर एंव माता पार्वती के विवाह का रोचकीय प्रसंग सुनाकर भक्त श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। श्रीरम कथा के क्रम को आगे ले जाते हुए कथावाचक महामण्डलेश्वर स्वामी प्रखर जी महाराज ने शिव पार्वती विवाह की तैयारी एवं शिव की विचित्र बारात का वर्णन सुनाया। उन्होंने रामचरित मानस के एक छन्द के माध्यम से शिव पार्वती विवाह के दृश्य को वर्णित करते हुए कहा

कोटिहुं बदन नहिं बनै बरनत जग जननि सोभा महा।
सकुचहिं कहत श्रुति सेष सारद मंदमति तुलसी कहा।।
छवि मातु भवानि गवनीं मध्यम मण्डप सिव जहां।
अवलोक सकहिं च सुकुच पति पद कमल मनु मधुकरु तहां।।

उक्त छंद का भावार्थ समझाते हुए परम पूज्य स्वामी जी ने कहा कि शिव पार्वती विवाह के समय जगजननी मां पार्वती की शोभा का वर्णन कोरोडों मुखों से भी नही किया जा सकता था। वेद, शेष जी एवं स्वयं माता सरस्वती भी उनकी महिमा का वर्णन करने में सकुचा रहे थे। सौन्दर्य की खान माता भवानी मण्डप के मध्य वहां पहंची जहां शिवजी थे। वे भगवान शिव के चरणों में निहारने में भी संकोच कर रही थीं। फिर भी उनके मन का भ्रमर शिव चरण रूपी कमलों का रसपान कर रहा था। महाराज श्री ने शिव पार्वती विवाह का वर्णन करते हुए आगे कहा कि मुनिजनों की आज्ञा से सर्वप्रथम भगवान एवं माता पार्वती ने गणेश पूजन किया। तत्पश्चात मुनिजनों ने वेदों में वर्णित विवाह रीति के अनुसार सभी रीतियां सम्पन्न कहाईं। हिमाचल राज ने अपने हाथ में कुश एवं कन्या का हाथ लेकर उन्हें भवानी स्वरुप में भगवान शिव को समर्पित किया। भगवान शिव के पाणिग्रहण अवसर पर इन्द्रादि सभी देवता हर्षित हुए। एक ओर मुनिगण वेद मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे दूसरी ओर देवगण भगवान शिव की जय जयकार करने लगे। सारा ब्रह्माण्ड आनन्द से सरावोर था। ऐसे दिव्य वातावरण में भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह सम्पन्न हुआ। हिमचाल राज की तरफ से अनेक हाथी घोड़े, गऊएं, वस्त्रादि, मणि, माणिक, अन्न, स्वर्ण आदि अनेक वस्तुएं भगवान शिव को भेट की गईं जिनका वर्णन किसी के लिए भी सम्भव था।

स्वामी जी ने विवाहोपरान्त भगवान शिव की बारात की विदाई की कथा का रसास्वादन कराते हुए कहा कि

जबहिं संभु कैलासहिं आए। सुर सब निज निज लोक सिधाए।।
जगत मातु पितु संभु भवानी। तेउ सिंगारु न कहऊं बरवानी।।

अर्थात भगवान शिव अपनी बारात की विदाई कराकर कैलाश पर्वत पहुंचे तब सब देवता अपने–अपने लोकों को चले गए। राम चरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि माता पार्वती एवं भगवान शिव जगत के माता पिता हैं। इसलिए मैं स्वयं को उनके मनोहारी श्रंगार का वर्णन करने में समर्थ नहीं पाता। विवाहोपरान्त भगवान शिव और माता पार्वती कैलाश पर्वत पर निवास करने लगे। वे नित्य नए विहार करते थे। इस प्रकार बहुत समय बीत गया। उनके पश्चात उनके छह मुखधारी पुत्र (स्वामी कार्तिक) का जन्म हुआ जिन्होंने बड़े होकर तारकासुर नाम के राक्षस का वध किया।

उत्तर प्रदेश समाचार सेवा

के स्थापना दिवस पर प्रकाशित

सांस्कृतिक गौरव विशेषांक

अभ्युदय

के प्रकाशन पर

हार्दिक शुभकामनाएं

उत्तराखण्ड पेयजल निगम
(निर्माण शाखा)
हरिद्वार

माघ मास महात्म

प्रयाग में विराजते हैं सभी तीर्थ

प्रो.दिव्य स्वरूप ब्रह्मचारी जी महाराज

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के मीमांसा विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष

प्रयाग महाकुम्भ 2025 में महामण्डलेश्वर स्वामी प्रखर जी महाराज के सानिध्य में आयोजित शिविर के ज्ञानालय में शुरु से अंत तक चले धार्मिक आयोजनों में माघ महात्म कथा, संत सम्मेलन, विद्वत संगोष्ठी व रामकथा आदि अपने–अपने क्रम में नियमित रूप से जारी रहे। ज्ञानालय में जारी कार्यक्रमों में नित्य प्रति प्रातः 9 बजे से एक बजे तक परम विद्वान सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के मीमांसा विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. दिव्य स्वरूप ब्रह्मचारी जी महाराज के द्वारा माघ महात्म की कथा प्रस्तुत की गई।

पूर्वान्ह 11 बजे से दोपहर एक बजे तक आयोजित होती रही विद्वत संगोष्ठी तथा शिविर के सायंकालीन सत्र में परम श्रद्धेय महामण्डलेश्वर स्वामी प्रखर जी महाराज के श्रीमुख से निसृत श्रीरामकथा के पावन महानद में धर्मावलम्बी श्रोताओं ने प्रतिदिन अवगाहन कर आनन्द की प्राप्ति की।

श्री माघ महात्म कथा

प्रयाग महाकुम्भ 2025 के प्रखर परोपकार मिशन शिविर के ज्ञानालय में आयोजित माघ महात्म कथा प्रस्तुत करते हुए सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के मीमांसा विभाग के प्रोफेसर परम विद्वान प्रो दिव्य स्वरूप ब्रह्मचारी जी महाराज ने प्रथम दिन की कथा में कहा कि माघ माह में सारे तीर्थ अपने–अपने परिकरों के साथ प्रयाग में विराज जाते हैं। यहां कल्पवास करने वाले धर्मावलम्बी श्रद्धालुओं को गंगा में स्नान एवं सभी तीर्थों की व्याख्या करते हुए चल और अचल दो प्रकार के तीर्थों के विषय में बताया।

उन्होंने बताया कि कुम्भ पर्व जैसे अवसरों पर साधु संत चल तीर्थ के रूप में विचरते हैं सभी श्रद्धालुओं को उनका चल तीर्थ के रूप में दर्शन लाभ मिलता है। साथ संगम तीर्थ में स्नान से उहें प्रयाग में विराजे सभी तीर्थों की कृपा भी प्राप्त होती है। अचल तीर्थ प्रयाग के सभी मन्दिरों में विराजमान रहते हैं। श्रद्धालुओं को चल और अचल दोनों प्रकार के तीर्थों के दर्शन करने चाहिए।

ब्रह्मचारी जी ने बताया कि प्रयाग में आये श्रद्धालु तीर्थ यात्रियों को सर्वप्रथम सूर्योदय से पूर्व ही त्रिवेणी में स्नान कर सभी मन्दिरों के दर्शन करने चाहिए, तत्पश्चात् दान पुण्य करना चाहिए। दान के बारे में समझाते हुए उहोंने

बताया कि प्रयाग में गुड़ युक्त तिल या तिल अथवा गुड़ का दान सर्वोत्तम माना गया है। उन्होंने बताया कि सभी धान्यों में तिल ही सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए शास्त्रों में उसके दान को ही सर्वोत्तम कहा गया है। तिल के दान के बारे में बताते हुए कथा व्यास ब्रह्मचारी जी ने बताया कि तिल दान से मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। उन्होंने छान्दोग्य उपनिषद के संदर्भ से बताया कि प्रयाग मं ऐसे ब्राह्मणों को दान देना चाहिए जो त्रिकाल संध्या करते हौं, वही उस दान को ग्रहण करने के लिए सुपात्र होते हैं। बताया कि त्रिकाल संध्या धारी ब्राह्मणों के उदर में गया धान्य एवं दान दिया द्रव्य दानदाता के समस्त पापों को नष्ट करता है। प्रथम दिवस की कथा के अन्त में उहोंने कहा कि तिल के दान से मनुष्य के अज्ञान की निवृत्ति तथा उसमें ज्ञान की आवृत्ति होती है।

प्रयाग में गुड़ युक्त तिल या तिल अथवा गुड़ का दान सर्वोत्तम माना गया है। उन्होंने बताया कि सबी धान्यों में तिल ही सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए शास्त्रों में उसके दान को ही सर्वोत्तम कहा गया है। तिल के दान के बारे में बताते हुए कथा व्यास ब्रह्मचारी जी ने बताया कि तिल दान से मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। उन्होंने छान्दोग्य उपनिषद के संदर्भ से बताया कि प्रयाग मं ऐसे ब्राह्मणों को दान देना चाहिए जो त्रिकाल संध्या करते हौं वही उस दान को ग्रहण करने के लिए सुपात्र होते हैं। बताया कि त्रिकाल संध्या धारी ब्राह्मणों के उदर में गया धान्य एवं दान दिया या दव्य दानदाता के समस्त पापों को नष्ट करता है।

दूसरे दिन की कथा का श्रवण कराते हुए ब्रह्मचारी जी ने कहा कि वे मनुष्य धन्य हैं जो माघ मास में गंगा स्नान कर दान देने तथा व्रत नियमों का पालन करते हैं। उन्होंने कहा कि पुण्यों के क्षीण होने से मनुष्य स्वर्ग से भी वापस आ जाता है। लेकिन जो भी माघ मास में पवित्र गंगा में स्नान कर दानादि तथा व्रतादि नियमों का पालन करता है वह स्वर्ग जाने पर कभी वापस नहीं आता। उहोंने कहा इससे बढ़कर कोई नियम. तप, दान पाप नाशक नहीं है। उन्होंने बताया कि महर्षि भृगु ने मणिकूट पर्वत पर विध्याधरों को यही कथा सुनाई थी।

तीसरे दिन की कथा में प्रो. दिव्य स्वरूप ब्रह्मचारी ने बताया कि एक दिन महर्षि वशिष्ठ ने राजा को से कहा कि हे राजन मैं तुम्हें अब उस माघ महात्म के बारे में बताता हूं जो कीर्तिवीर्य के पूछने पर भगवान दत्तात्रेय जो सत्य पर्वत पर रहते थे तब महिष्मति के राजा सहस्रार्जुन ने उनसे पूछा कि योगियों में श्रेष्ठ दत्तात्रेय जी , मैंने सभी धर्म सुने अब आप मुझे माघ का महात्म कहिये। तब दत्तात्रेय जी ने कहा कि जो ब्रह्मा जी नारद से कहा वही मैं तुमसे कहता हूं। इस कर्मभूमि भारत में जिसने जन्म लेकर माघ स्नान नहीं किया उसका जन्म निष्फल गया। उहोंने कहा कि भगवान प्रसन्नता , पापों के नाश और स्वर्ग की प्राप्ति के लिए माघ स्नान अवश्य करना चाहिए। यदि यह पुष्ट और शुद्ध शरीर माघ स्नान के बगैर ही रह जाए तो इसकी रक्षा करने से क्या लाभ। तब यह शरीर जल में बुलबुले के समान , मक्खी जैसे तुष्ठ जन्तु के समान और मृत समान है। उहोंने कहा कि भगवान विष्णु की पूजा न करने वाला ब्राह्मण, बिना श्राद्ध के, ब्राह्मण रहित क्षेत्र और आचार रहित कुल ये सब नाश के बराबर हैं।

भगवान दत्तात्रेय ने राजा सहस्रार्जन से कहा कि गर्व से धर्म का, क्रोध से तप का नाश हो

माघ स्नान के महात्म को बताते हुए भगवान दत्तात्रेय द्वारा राजा को सुनाई कथा का संदर्भ देते हुए प्रो दिव्य स्वरूप ब्रह्मचारी ने बताया कि जैसे मेघों से मुक्त होकर चन्द्रमा प्रकाश करता है वैसे ही श्रेष्ठ मनष्य माघ मास में स्नान करके प्रकाशमान होते हैं। काया, वाचा,मनसा से किये हुए छोटे या बडे, नये या पुराने सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। आलस्य में बिना जाने जो भी पाप हो जाते हैं, वे भी माघ स्नान से नाश को प्राप्त होते हैं।

जाता है। आगे कहा कि बिना अभ्यास और आलस्य वाली विद्या. असत्य वाणी, विरोध करने वाला राजा, जीविका के लिए तीर्थ यात्रा, जीविका के लिए व्रत, संदेहयुक्त मंत्र का जप ,व्यग्रचित्त होकर जप करना, वेद न जानने वाले को दान देना,संसार में नास्तिक मत ग्रहण करना,श्रद्धा बिना धार्मिक क्रिया करना यह सब व्यर्थ है। उन्होंने कहा कि जिस तरह दरिद्र का जीना व्यर्थ है उसी प्रकार माघ स्नान बिना भी मनुष्य का जीवन व्यर्थ है। इसके अलावा भी भगवान दत्तात्रेय ने राजा से कहा ब्रह्मघाती, सोना चुराने वाला, मदिरा पीने वाला, गुरुपत्नी गामी तथा इन चारों की संगति करने वाला भी माघ स्नान से पाप मुक्त हो ही जाता है। उन्होंने कहा कि जल कहता है कि सूर्योदय से पहले जो जो मुझमें स्नान करता है मैं उसके बड़े से बड़े पाप भी नष्ट कर देता हूं। महापातक भी माघ में गंगा स्नान करने से नष्ट हो जाते हैं। माघ स्नान के महात्म को बताते हुए भगवान दत्तात्रेय द्वारा राजा को सुनाई कथा का संदर्भ देते हुए प्रो दिव्य स्वरूप ब्रह्मचारी ने बताया कि जैसे मेघों से मुक्त होकर चन्द्रमा प्रकाश करता है वैसे ही श्रेष्ठ मनष्य माघ मास में स्नान करके प्रकाशमान होते हैं। काया, वाचा,मनसा से किये हुए छोटे या बडे, नये या पुराने सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। आलस्य में बिना जाने जो भी पाप हो जाते हैं, वे भी माघ स्नान से नाश को प्राप्त होते हैं। उन्होंने कहा क जिस तरह जन्मान्तर के अभ्यास से ही माघ स्नान में मनुष्य की रुचि होती है। यह अपवित्रों को पवित्र करने वाला बड़ा तप और संसार रूपी कीचड़ को धोने का पवित्र माध्यम है।

अगले दिन की कथा में प्रो दिव्य स्वरूप ब्रह्मचारी जी ने भगवान दत्तात्रेय जी के एक प्रसंग के माध्यम से बताया कि भृगुवंश में एक ऋषिका नाम की ब्राह्मणी थी वह बहुत सुशील और दानशील महिला थी। वह विन्ध्याचल पर्वत के नीचे बहती रेवा नदी के तट पर तप करती थी। वह ब्राह्मणों से याग आदि कराकर ही दिन में छठे प्रहर में भोजन ग्रहण करती थी। बड़े संतोष के साथ वह अपना जीवन व्यतीत करती थी। कपिल नदी के संगम पर 60 वर्ष तक माघ स्नान किया और अंत मं वहीं पर वह मृत्यु को प्राप्त हो गई। माघ स्नाने के फल से उसने विष्णुलोक में स्थान प्राप्त किया। जिसका नाम तिलोत्मा पड़ा। तिलोत्मा अति रूपवान व गायन में अति निपुण थी। एक बार सुन्द उपसुन्द के सैनिकों ने तिलोत्मा को देख लिया। उसके रूप और सौन्दर्य का वर्णन अपने स्वामी सुन्द उपसुन्द से किया। सैनिकों की बात सुनकर दोनों मदिरापान करके उसे देखने चल दिये। तिलोत्मा का रूप सौन्दर्य देखकर दोनों दैत्य चकित रह गए। दोनों दैत्य तिलोत्मा को प्राप्त करन के लिए आपस में ही युद्ध करने लगे। उस आपसी युद्ध में दोनों समाप्त हो गए। अपना देवकार्य सिद्ध कर तिलोत्मा दसो दिशाओं को प्रकाशमान करती हुई वापस ब्रह्मलोक को चली गई। कथा के माध्यम से माघ स्नान का महत्व समझाते हुए कथा व्यास ने कहा कि सभी श्रद्धावान स्त्री पुरुषों को उत्तम गति पाने के लिए माघ मास में विधि पूर्वक पवित्र नदी में स्नान करना चाहिए।

आजमगढ़ का पौराणिक महत्व

सूर्य प्रकाश तिवारी
उत्तर प्रदेश समाचार सेवा आजमगढ़

आजमगढ़ जिले की स्थापना सन् 1665 में मुगल काल मैं हुई थी। पूर्वी उत्तर प्रदेश के वाराणसी एवं गोरखपुर जनपद से 100 किलोमीटर की दूरी पर गंगा एवं सरयू नदी के बीच में तमसाा के किनारे पर जिला बसा हुआ है। सतयुग में यह अवध का एक क्षेत्र था। आजमगढ़ का इतिहास सतयुग से शुरू होता है। आजमगढ़ पहले अयोध्या का अंग था। सती अनुसुईया के तीनों पुत्र चंद्रमा ऋषि, दत्तात्रेय ऋषि और दुर्वासा ऋषि की तपोस्थली रही है। सती अनुसुईया के सबसे बड़े बेटे चंद्रमा ऋषि का आश्रम सिलनी और तमसा नदी के संगम पर है । दत्तात्रेय ऋषि का आश्रम कुँवर और तमसा नदी के संगम पर है और सबसे छोटे बेटे दुर्वासा ऋषि का आश्रम मंजूषा और तमसा नदी के संगम पर स्थित है। तीनो आश्रम सतयुग कालीन हैं। वहां पर स्वयंभू शिवलिंग है। जिस शनि देव को हनुमान जी ने लंका में रावण के बंधन से मुक्त कराया था, वो शनि देव आजमगढ़ के बिलरियागंज के रामगढ़ के पास दान शनिचरा में स्थापित है। यहां पर आपको शनि देव की उपस्थिति का आभास हो जाएगा।

ऐसी मान्यता है कि आजमगढ़ के महराजगंज के पास भैरव बाबा का मंदिर है। इस मंदिर के बारे में कहा जाता है कि राजा दक्ष यहीं पर यज्ञ कर रहे थे और सती यहीं पर हवन कुंड में कूद कर अपनी जान दे दी थी। सती के साथ आये भैरव ने जब यह दृश्य देखा तो उत्पात मचा दिया। जैसे ही भगवान शिव जी को ये बात पता लगी वो तुरंत आकर सती के अधजले शरीर को लेकर तांडव करने लगे। भगवान विष्णु जी ने सती के शरीर को टुकड़ो में सुदर्शन चक्र से काट दिया। जहां जहां अंग गिरे वो स्थान शक्ति पीठ हो गए ।52 शक्ति पीठ में से एक शक्तिपीठ आजमगढ़ के मेहनगर के पास पल्हना धाम है। इस स्थान पर सती माता का जंघा गिरा था। मेहनगर के पास महा मण्डलेश्वर शिव मंदिर है। इस मंदिर के पास एक तालाब है। मंदिर और तालाब का निर्माण रावण ने कराया था। रावण ने अपने कुछ सैनिक यहाँ स्थापित किये थे जो रक्ष संस्कृति का प्रचार प्रसार करते थे। ये सैनिक दिन भर लड़ते और घायल अवस्था मे तालाब में स्नान करते ही स्वस्थ हो जाते थे। आज भी इस स्थान पर चर्म रोग से पीड़ित मरीज तालाब में स्नान कर रोग मुक्त हो जाते है। राजा परीक्षित ने सर्प यज्ञ यहाँ भी किया था और इस कारण से आजमगढ़ वाराणसी मार्ग पर एक स्थान आवक के नाम से जाना जाता है। आवक पहले अवंतिकापुरी के नाम से प्रसिद्ध था। साँप से भयाक्रांत व्यक्ति यहां पूजा पाठ करने आता है। आजमगढ़ के निजामाबाद में गुरु चरण पादुका साहिब गुरुद्वारा है। इस स्थान पर गुरु नानक देव जी और गुरु तेगबहादुर जी की खड़ाऊ यहां पर सुरक्षित रखा हुआ है। इसी गुरुद्वारे में शिख गुरु परम्परा की बड़ी संख्या में हस्तलिखित ग्रंथ सुरक्षित रक्खी हुई है।

भगवान विष्णु के दस अवतार में से एक अवतार वराह भगवान का प्राचीन मंदिर आजमगढ़ के मेहनगर में है। स्थानीय लोगों का कहना है कि भगवान वराह की आँखें हीरे की हैं। हिंदी साहित्य के विकास में इस जिले का काफी योगदान रहा है राहुल सांकृत्यायन, अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, डॉ लक्ष्मी नारायण मिश्र जैसे विद्वानों की जन्मस्थली रही है। हल्दीघाटी के रचयिता श्याम नारायण पांडे का जन्म स्थान इसी जनपद में था बाद मऊ जिले में चला गया। कैफी आजमी शिवली नोमानी इसी जिले से संबंधित रहे। कला के क्षेत्र में ब्लैकपाटरी निजामाबाद विश्व विख्यात है। मुबारकपुर की रेशमी बनारसी साड़ियां एवं हरिहरपुर संगीत घरानाअपना अलग पहचान बन चुका है।

उ० प्र० समाचार सेवा के सांस्कृतिक गौरव विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ

अमित कुमार सिंह
जिला अध्यक्ष
राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद्
शाहजहाँपुर

श्रीमती लता अमित सिंह
ब्लाक प्रमुख
जलालाबाद
शाहजहाँपुर

उ० प्र० समाचार सेवा के सांस्कृतिक गौरव विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ

दीपक कुमार दीक्षित
प्रधानाचार्य
राजकीय हाईस्कूल, बरीलालपुर,
निगोही, शाहजहाँपुर

उ० प्र० समाचार सेवा के सांस्कृतिक गौरव विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ

राम बरन सिंह
पार्षद नगर निगम, शाहजहाँपुर
महानगर मीडिया प्रभारी
भारतीय जनता पार्टी
शाहजहाँपुर

उ० प्र० समाचार सेवा के सांस्कृतिक गौरव विशेषांक के प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

वित्त विहीन स्कूल प्रबंधक वेलफेयर एसोसिएशन, उ. प्र.

बसंत सारस्वत
प्रदेश अध्यक्ष

हरेन्द्र सिंह ढिल्लो
प्रदेश महामंत्री

नरेश सिद्धू
जिला अध्यक्ष

राजीव सक्सेना
कोषाध्यक्ष

कार्यालय : शान्ति कुंज, आवास विकास (प्रथम), अमरोहा, उ0 प्र0

उ० प्र० समाचार सेवा के सांस्कृतिक गौरव
विशेषांक के प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

बलवंत यादव
(भाजपा नेता)
पूर्व ब्लाक प्रमुख, मिर्जापुर
विधान सभा क्षेत्र, 348, निजामाबाद
जिला-आज़मगढ़ (उ. प्र.)

उ० प्र० समाचार सेवा के सांस्कृतिक गौरव
विशेषांक के प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

SINGHAI AUTOMOBILES
MAHRONI (U.P.)
PROPRITER
DHIRENDRA SINGHAI
MOBILE : 9936903264

उ० प्र० समाचार सेवा के सांस्कृतिक गौरव
विशेषांक के प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

शिवदत्त दुबे

जिला संवाददाता

उत्तर प्रदेश समाचार सेवा
देवरिया

उ० प्र० समाचार सेवा के सांस्कृतिक गौरव
विशेषांक के प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

डॉ. एस. के. मिश्रा

समाज सेवी
नगर पंचायत, मिरहयी
जिन्हैरा, जनपद एटा

उ० प्र० समाचार सेवा के सांस्कृतिक गौरव
विशेषांक के प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

कमलेश कुमार करुष

प्राथमिक विद्यालय, किरण
शिक्षा क्षेत्र हालिया
जनपद मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश

उ० प्र० समाचार सेवा के सांस्कृतिक गौरव
विशेषांक के प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

अजय सिंह

भाजपा विधायक
307, विधान सभा क्षेत्र, हरैया,
जिला बस्ती

सत्सङ्गः परमा गतिः ।

SHAHJAHANPUR

ADMISSIONS OPEN

Remembering the life and times of **Dr. Ashish K. Massey**

JOHN NAVE SENIOR SECONDARY SCHOOL

NAVE INSTITUTE INTER COLLEGE

NAVE PRIVATE INDUSTRIAL TRAINING INSTITUTE

FACILITIES :-

1. Student Centric Teaching
2. Lush Green Safe Campus
3. Swimming Pool4. Career Counselling for Senior Students
5. Leadership Seminars
6. Computer and Science Labs
7. Cricket, Football, Hockey, Volleyball, Badminton & Tennis Facilities
8. Stage activities: Speech Trophy, Debates, Music, Plays
9. Affordable Fees
10. National Cadet Corps (NCC)
11. Bus Facility Available
12. Overall good result in Academics
13. Character building as an upright Indian Citizen
14. Experienced Faculty Members
15. Convenient Banking Facilities
16. Library

We splash colorful fountains of opportunities to your future.

REGISTRATION OPEN
For 2023-24 Session